(८८) उनके वर्ग के घमण्डी प्रमुखों ने कहा हे शुऐब ! हम तुम्हें एवं जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको अवश्य अपने नगरों से निकाल देंगे वरन् तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ[1] उन्होंने कहा कि जबकि हम उससे घिन करते हों ।[2]

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا ۚ قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ﴿٨٨﴾

(८९) हम तो अल्लाह पर मिथ्या का आरोपण करेंगे यदि हम तुम्हारे धर्म में फिर से आ गये जबकि अल्लाह ने हमें उससे मुक्त कर दिया है[3] तथा हमारे लिये उसमें फिर से आ जाना संभव नहीं परन्तु यह कि अल्लाह चाहे जो

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ

[1]इन सरदारों के घमण्ड तथा अभिमान का अनुमान कीजिए कि उन्होंने ईमान तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) के आमन्त्रण का केवल खण्डन ही नहीं किया अपितु उससे भी बढ़ कर अल्लाह के पैग़म्बर तथा ईमान लाने वालों को चेतावनी भी दी कि या तो तुम अपने पूर्वजों के धर्म पर वापस आ जाओ वरन् हम तुम्हें यहाँ से निकाल देंगे। ईमानवालों को अपने पूर्व के धर्म पर लाने की बात कुछ सीमा तक समझ में आती है, क्योंकि उन्होंने कुफ्र को छोड़ कर ईमान का मार्ग अपनाया था, परन्तु आदरणीय शुऐब को भी पूर्वजों के समुदाय की ओर लौटने का आमन्त्रण इसलिए था कि वह उन्हें भी नबूवत व चेतावनी तथा आमन्त्रण से पूर्व अपने धर्म का अनुयायी समझते थे। यद्यपि वास्तव में यह सत्य नहीं है। अथवा अधिकतर के कारण उन की गणना भी उन्हीं में कर लिया जो पहले अपने पूर्वजों के धर्म पर थे।

[2]यह लुप्त प्रश्न का उत्तर है। जिसमें अरबी वर्णमाला का हम्ज़ा इंकार करने के लिये है तथा वाव दशा के वर्णन के लिए है। अर्थात क्या तुम हमें अपने धर्म में पुन: लाओगे अथवा हमें अपनी नगरी से निकाल दोगे जब कि हम इस धर्म में पुनर्गमन तथा इस नगरी से निकलने में रुचि न रखते हों। अभिप्राय यह है कि तुम्हारे लिये ऐसा करना उचित नहीं कि तुम हमें दोनों में से किसी एक को स्वीकार करने पर बाध्य करो।

[3]अर्थात यदि हम पूवर्जों के धर्म की ओर लौट आयें जिससे अल्लाह तआला ने हमें मुक्त कर दिया है, तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने ईमान तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) का आमन्त्रण दे कर अल्लाह पर झूठ बाँधा था। अर्थ यह हुआ कि यह सम्भव नहीं है कि हमारी ओर से ऐसा हो।

رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ﴿٨٩﴾

हमारा पोषक है ।[1] हमारे परमेश्वर ने प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान की परिधि में ले रखा है, हमने अपने अल्लाह पर ही भरोसा कर लिया ।[2] हे हमारे परमेश्वर ! हमारे एवं हमारे लोगों के बीच निर्णय कर दे सत्य के साथ तथा तू सर्वोत्तम निर्णायक है ।[3]

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ ﴿٩٠﴾

(९०) तथा उनके वर्ग के काफ़िर प्रमुखों ने कहा कि यदि तुम ने शुऐब का अनुसरण किया तो उस समय तुम नि:सन्देह क्षतिग्रस्त हो जाओगे ।[4]

---

[1]अपना संकल्प व्यक्त करने के पश्चात इस बिषय को अल्लाह की इच्छा के सुपुर्द कर दिया । अर्थात हम अपनी इच्छा से अब कुफ़्र की ओर नहीं लौट सकते । हाँ, यदि अल्लाह चाहे तो अन्य बात है । कुछ लोग कहते हैं कि यह ﴿حَتَّىٰ يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ﴾ के समान असंभव के साथ संबन्धित करना है अर्थात जैसे सूई के नाके में ऊँट का प्रवेश असंभव है इसी प्रकार हमारा अपने पूवर्जों के धर्म में पुनर्गमन असंभव है ।

[2]कि वह हमें ईमान पर दृढ़ रखेगा तथा हमारे एवं अधर्म तथा अधर्मियों के मध्य आड़ बना रहेगा । हम पर अपने उपकार की वर्षा करेगा तथा अपनी यातना से सुरक्षित रखेगा ।

[3]तथा जब अल्लाह निर्णय कर लेता है तो यही होता है कि वह ईमान वालों को सुरक्षित रख कर झूठे तथा घमण्डियों का सर्वनाश कर देता है । यह मानो अल्लाह के प्रकोप की माँग है ।

[4]अपने पूर्वजों के धर्म को छोड़ना तथा माप-तौल में कमी न करना, यह उनके निकट हानिवाली बात थी । वास्तविकता यह थी कि इसमें उन्हीं का लाभ था, परन्तु संसार वालों की दृष्टि में लाभ ही सभी कुछ होता है, जो माप-तौल में डंडी मारने से उन्हें प्राप्त हो रहा था, वह ईमानवालों के दीर्घगामी लाभ के लिए उसे क्यों छोड़ते ?

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ ﴿٩١﴾

(९१) तो उनको भूकम्प ने आ पकड़ा, इसलिए वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये ।[1]

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٢﴾

(९२) जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, उनकी यह स्थिति हो गयी कि जैसे उन (घरों) में कभी बसे ही नहीं थे ।[2] जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही हानि में पड़ गये ।[3]

فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۖ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٩٣﴾

(९३) उस समय शुऐब उनसे मुहँ मोड़ कर चले तथा कहने लगे कि हे मेरे समुदाय के लोगो ! मैंने अपने प्रभु के संदेश तुम्हें पहुंचा दिये तथा मैं ने तुम्हारी शुभ चिन्ता की, फिर मै उन काफिरों पर दुखी क्यों हूँ ?[4]

---

[1] यहाँ رَجْفَة (रजफ़ः) आया है जिसका अर्थ भूकम्प है तथा सूर: हूद आयत संख्या ९४ में صَيْحَة शब्द जिसका अर्थ "चीख़" प्रयोग हुआ है । इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि प्रकोप में यह सब हुआ । अर्थात छाया वाले दिन प्रकोप आया, सर्वप्रथम मेघों की छाया में आग के शोले चिंगारियाँ, फिर आकाश से अति तीव्र गर्जन हुई तथा धरती में भूकम्प आया, जिसके कारण उनकी आत्माओं ने शरीर छोड़ दिया तथा अजीवित शव बन कर पक्षियों की भाँति घुटनों में मुँह देकर औंधे के औंधे पड़े रह गये ।

[2]अर्थात जिस बस्ती से यह अल्लाह के दूत तथा उनके अनुयायियों को निकालने पर अड़े थे, अल्लाह की ओर से प्रकोप होने के कारण ऐसे हो गये, जैसे वह यहाँ रहते ही न रहे हों ।

[3]अर्थात हानि में वही लोग रहे जिन्हों ने पैग़म्बरों को झुठलाया, न कि पैग़म्बर तथा उन पर ईमान लाने वाले । तथा हानि भी दोनों लोक में । संसार में अपमान की यातना का स्वाद चखा तथा परलोक में उनके लिए अत्यधिक दुखदायी कठोर यातना तैयार है ।

[4]यातना, तथा सर्वनाश के पश्चात जब वह (आदरणीय शुऐब) वहाँ से चले, तो अत्यधिक भावुक हो कर कहा । तथा साथ ही साथ यह भी कह दिया कि जब मैंने सत्य की चेतावनी का दायित्व अदा कर दिया एवं अल्लाह का संदेश उन तक पहुँचा दिया, तो अब मैं ऐसे लोगों पर अपने संवेदना का प्रदर्शन करूँ तो क्यों करूँ ? जो इसके उपरान्त अपने अविश्वास तथा अनेकेश्वरवाद पर अड़े रहे ।

وَمَآ أَرۡسَلۡنَا فِي قَرۡيَةٖ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّآ أَخَذۡنَآ أَهۡلَهَا بِٱلۡبَأۡسَآءِ وَٱلضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمۡ يَضَّرَّعُونَ ﴿٩٤﴾

(९४) तथा हमने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा कि वहाँ के निवासियों को हम ने रोग तथा दरिद्रता से पकड़ा न हो, ताकि वे गिड़गिड़ायें (विनती करें)।[1]

ثُمَّ بَدَّلۡنَا مَكَانَ ٱلسَّيِّئَةِ ٱلۡحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَواْ وَّقَالُواْ قَدۡ مَسَّ ءَابَآءَنَا ٱلضَّرَّآءُ وَٱلسَّرَّآءُ فَأَخَذۡنَٰهُم بَغۡتَةٗ وَهُمۡ لَا يَشۡعُرُونَ ﴿٩٥﴾

(९५) फिर हमने उस दरिद्रता को सुसम्पन्न्ता से बदल दिया, यहाँ तक जब वे सम्पन्न हो गये तथा कहने लगे कि हमारे पूर्वजों को भी तंगी तथा उन्नति का सामना करना पड़ा, तो हमने सहसा उनको पकड़ लिया।[2] तथा उनको सूचना भी न थी।

---

[1] بأساء (बासाअ) का शब्दार्थ शारीरिक दुख अर्थात रोग है तथा ضرّاء (जर्राअ) का अर्थ निर्धनता एवं दरिद्रता है। तात्पर्य यह है कि जिस बस्ती में भी हमने संदेशवाहक भेजा, उन्होंने उसे झुठलाया, जिसके प्रत्युत्कार में हमने उन्हें रोग एवं दीनता में ग्रस्त कर दिया, जिस से उद्देश्य यह था कि यह अल्लाह की ओर पलट आयें तथा उस से विनय करें।

[2] अर्थात निर्धनता तथा रोग में ग्रस्त होने के कारण जब उन में अल्लाह की ओर ध्यान केन्द्रित करने तथा उसके मार्ग पर चलने की भावना भी उत्पन्न नहीं हुई, तो हमने उनकी निर्धनता को धन-धान्य से परिपूर्ण तथा रोग को स्वस्थ में परिवर्तित कर दिया ताकि वह उस पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त कर सकें। परन्तु इस आन्दोलन से भी उनकी जीवन शैली में परिवर्तन न आया तथा उन्होंने कहा कि यह तो सदैव से होता चला आया है कभी निर्धनता आ गयी कभी धन धान्य से परिपूर्ण हो गये। कभी रोग तो कभी स्वस्थ, कभी रंक कभी राजा अर्थात निर्धनता का प्रथम उपचार न उनके लिए सफल रहा तथा न धन-धान्य से परिपूर्णता, उनके सुधार के लिए सफल सिद्ध हुई। वह इसे रात-दिन की चाल ही समझते रहे तथा उसके पीछे कार्यरत अल्लाह की इच्छा को समझने में असफल रहे, तो फिर हमने उन्हें सहसा अपने प्रकोप के चंगुल में पकड़ लिया। इसीलिए हदीस में मुसलमानों के लिए इसके विपरीत वर्णित किया गया है कि वह वैभव तथा सुविधा प्राप्त होने पर अल्लाह की कृतज्ञता व्यक्त करते हैं तथा दुख पहुँचने पर धैर्य से काम लेते हैं, इस प्रकार दोनों ही स्थिति उनके लिए कल्याणकारी तथा पुण्य का कारण बनती है। (सहीह मुस्लिम किताबुज जुहद बाबुल मोमिन अमरुहू कुल्लुहू ख़ैर)

(९६) और यदि उन नगरों के निवासी ईमान लाते तथा संयम बरतते तो हम आकाश एवं धरती की विभूतियों के द्वार उन पर खोल देते परन्तु उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन्हें उन के कुकर्मों के कारण घेर लिया।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٩٦﴾

(९७) क्या फिर भी इन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं कि उन पर हमारा प्रकोप रात्रि के समय आ पड़े जिस समय वह निद्रा में हों।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿٩٧﴾

(९८) तथा क्या उन बस्तियों के निवासी इस बात से निश्चिन्त हो गये हैं ? कि उन पर हमारा प्रकोप दिन चढ़े में आये जिस समय वे खेलों में व्यस्त हों।

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿٩٨﴾

(९९) क्या वह अल्लाह की योजना से निर्भय हो गये सो अल्लाह की योजना से क्षतिग्रस्त लोग[1] ही निर्भय होते हैं।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٩﴾

(१००) तो क्या जो लोग धरती में उस के निवासियों के विनाश के पश्चात उत्तराधिकारी

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَاۤ

---

[1]इन आयतों में अल्लाह तआला ने सर्वप्रथम यह वर्णन किया है कि ईमान (विश्वास) तथा संयम ऐसा विषय है कि जिस बस्ती के लोग उसे अपना लें उस पर अल्लाह तआला आकाश तथा धरती के धन-सम्पत्तियों के द्वार खोल देता है अर्थात आवश्यकतानुसार आकाश से वर्षा करता है तथा धरती को उससे सिंचाई करके उपज को बढ़ाता है। परिणामस्वरूप उन्नति तथा समृद्धि होती है, परन्तु इसके विपरीत झुठलाने वाले तथा कुफ्र का मार्ग अपनाने वाले समुदाय अल्लाह के प्रकोप के अधिकारी होते हैं, फिर ज्ञात नहीं होता कि रात्रि-दिन किस समय प्रकोप आ पड़े तथा खेलती-खाती इस बस्ती को एक क्षण में खण्डहर बना कर रख दे। इसलिए अल्लाह के इन प्रकोपों से निश्चिन्त नहीं होना चाहिए। इस निश्चिन्तता का परिणाम मात्र हानि के अन्य कुछ नहीं। مَكْرٌ (मकर) के भावार्थ के लिए देखिए सूरः आले इमरान आयत ५४ की व्याख्या।

أَن لَّوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

बने हैं उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि यदि हम चाहें तो उनके पापों के कारण उन्हें विपदा में डाल दें तथा उनके दिलों पर बन्द लगा दें फिर वे सुन न सकें ।[1]

تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا

(१०१) इन नगरों की कुछ घटनायें हम आप को बता रहे हैं तथा उन के ईशदूत उनके पास तर्कों सहित आये[2] फिर भी जिसे उन्होंने पहले नहीं माना उसे फिर मानने योग्य न हुये ।[3] इसी

---

[1]अर्थात पापों के परिणाम स्वरूप केवल प्रकोप ही नहीं आता है, दिलों पर भी ताले लग जाते हैं । फिर बड़े से बड़े प्रकोप भी उनको निश्चिन्तता की निद्रा से नहीं जगा सकते । अन्य कुछ स्थानों की भाँति अल्लाह तआला ने यहाँ भी वर्णन किया है कि जिस प्रकार हमने पूर्व के समुदायों को उनके पाप के कारण नष्ट किया, हम चाहें तो तुम्हें भी तुम्हारे कुकर्मों के परिणाम स्वरूप नष्ट कर दें । तथा दूसरी बात यह वर्णित की गयी कि सत्य की आवाज़ के लिए उनके कान बन्द हो जाते हैं । फिर चेतावनी एवं शिक्षा-दीक्षा उन के लिये व्यर्थ होकर रह जाती है ।

[2]जिस प्रकार पूर्व के पृष्ठों पर कुछ नबियों का वर्णन गुज़रा, بيّنات (बइय्येनात) का अर्थ तर्क, तथा युक्ति एवं चमत्कार दोनों से हैं । उद्देश्य यह है कि रसूल के द्वारा जब तक हमने अपनी निशानियाँ नहीं दिखा दीं, हमने उनको नष्ट नहीं किया । क्योंकि

﴿ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ﴾

"जब तक हम रसूल नहीं भेज देते प्रकोप नहीं उतारते ।" (सूर: बनी इस्राईल-१५)

[3]इसका एक भावार्थ यह है कि प्रतिज्ञा दिवस को जब उन से वचन लिया गया था तो ये अल्लाह के ज्ञान में ईमान लाने वाले न थे, इसलिए जब उन के पास अल्लाह के रसूल आये तो अल्लाह के ज्ञान के अनुसार वे ईमान नहीं लाये । क्योंकि उनके भाग्य में ईमान लाना नहीं था, जिसे अल्लाह ने अपने ज्ञान के अनुसार लिख दिया था । जिसको हदीस में فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूरतुल लैल) से तुलना की गयी है । दूसरा भावार्थ यह है कि जब उनके पास पैग़म्बर आये, तो वह इस कारण उन पर ईमान नहीं लाये कि वह इससे पूर्व सत्य को झुठला चुके थे । अर्थात प्रारम्भ में ही जिस चीज़ को झुठला चुके थे, यही पाप उनके ईमान न लाने का कारण बन गया तथा ईमान लाने के सौभाग्य से वे वंचित हो गये, इसलिए अगले वाक्य में मोहर लागने से तुलना की गयी है ।

بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوبِ الْكٰفِرِينَ ﴿١٠١﴾

प्रकार अल्लाह विश्वासहीनों के दिलों पर मुद्रा लगा देता है।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ وَإِنْ وَّجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

(१०२) तथा हमने उनके अधिकतर लोगों को वचन का पालन करते नहीं पाया [1] तथा हम ने उनमें से अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوسٰى بِاٰيٰتِنَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

(१०३) फिर उनके पश्चात हमने (ईशदूत) मूसा को अपने लक्षणों के साथ फ़िरऔन एवं उस के प्रमुखों के पास भेजा।[2] तो उन्होंने उनका हक़ पूरा न किया। फिर देखो कि उपद्रवियों का अन्त कैसा रहा।[3]

وَقَالَ مُوسٰى يٰفِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿١٠٤﴾

(१०४) तथा मूसा ने फ़रमाया, ऐ फ़िरऔन ! मैं अखिल जगत के प्रभु की ओर से पैग़म्बर हूँ।

﴿ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَآ إِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ۞ وَنُقَلِّبُ أَفْـِٔدَتَهُمْ وَأَبْصٰرَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهٖٓ أَوَّلَ مَرَّةٍ ﴾

"तथा तुझे क्या ज्ञात है ये तो ऐसे (दुर्भाग्यशाली) हैं कि इन के पास निशानियाँ भी आ जायें तब भी ईमान न लायें तथा हम उनके दिलों तथा आँखों को उलट देंगें (तो) जैसे यह इस (क़ुरआन) पर पहली बार ईमान नहीं लाये वैसे फिर न लायेंगे" (सूर: अल-अनाम १०९ तथा ११०)

[1]इससे कुछ ने अल्लाह के प्रभु होने का वचन लिया है जो आत्माओं के लोक में लिया गया था, कुछ ने प्रकोप टालने के लिए पैग़म्बर से जो सन्धि करते थे, वे वचन अथवा सन्धियाँ तथा कुछ ने सामान्य वचन का तात्पर्य लिया है, जो आपस में एक-दूसरे से करते थे। और यह वचन तोड़ना, चाहे वह किसी भी प्रकार हो, भ्रष्ट कार्य है।

[2]यहाँ से आदरणीय मूसा का वर्णन प्रारम्भ हो रहा है, जो वर्णित नबियों के पश्चात आये, जो महान सम्मानित पैग़म्बर थे, जिन्हें मिस्र के फ़िरऔन तथा उसकी जनता के पास निशानियाँ तथा चमत्कार दे कर भेजा गया था।

[3]अर्थात उन्हें डुबो दिया गया जैसा कि आगे आयेगा।

(१०५) मेरे लिए यही योग्य है कि सत्य के सिवाय अल्लाह पर कोई बात न बोलूँ। मैं तुम्हारे प्रभु की ओर से एक बड़ी निशानी भी लाया हूँ।[1] इसलिए तू इस्राईल की संतान को मेरे साथ भेज दे।[2]

حَقِيقٌ عَلَىٰٓ أَن لَّآ أَقُولَ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْحَقَّ ۚ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِىَ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٠٥﴾

(१०६) उस (फ़िरऔन) ने कहा यदि आप कोई चमत्कार लेकर आये हैं, तो उसे प्रस्तुत कीजिए यदि आप सच्चे हैं।

قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِـَٔايَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِن كُنتَ مِنَ ٱلصَّٰدِقِينَ ﴿١٠٦﴾

(१०७) फिर आपने अपनी छड़ी डाल दी, तो सहसा वह एव स्पष्ट अजगर सर्प बन गया।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِىَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

(१०८) तथा अपना हाथ बाहर निकाला, तो वह सहसा सभी देखने वालों के समक्ष बहुत ही चमकता हुआ हो गया।[3]

وَنَزَعَ يَدَهُۥ فَإِذَا هِىَ بَيْضَآءُ لِلنَّٰظِرِينَ ﴿١٠٨﴾

(१०९) फ़िरऔन के वर्ग के प्रमुखों ने कहा

قَالَ ٱلْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ

---

[1]जो इस बात का प्रमाण है कि मैं वास्तव में अल्लाह की ओर से भेजा गया रसूल हूँ। इस चमत्कार और बड़ी निशानी का वर्णन भी आगे आयेगा।

[2]इस्राईल की सन्तान जिनका मूल निवास सीरिया का क्षेत्र था, आदरणीय यूसुफ़ के समय में मिस्र चली गयी थी फिर वहीं के निवासी हो गये। फ़िरऔन ने उन्हें दास बना लिया था। तथा उन पर नाना प्रकार के अत्याचार करता था जिसका विस्तृत वर्णन सूरः अल बक़रः में गुज़र चुका है तथा आगे भी आयेगा। फ़िरऔन तथा उसके दरबार के मन्त्रियों ने जब आदरणीय मूसा के आमन्त्रण को ठुकरा दिया तो आदरणीय मूसा ने दूसरी माँग की कि इस्राईल की संतान को स्वतन्त्र कर दे ताकि यह अपने मूल स्थान पर जाकर मान-सम्मान का जीवन व्यतीत करें तथा अल्लाह की इबादत करें।

[3]अर्थात अल्लाह तआला ने जो दो बड़े चमत्कार प्रदान किये थे, अपनी सच्चाई के लिए उसे प्रस्तुत कर दिया।

إِنَّ هَٰذَا لَسَٰحِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٩﴾

कि यह बड़ा ज्ञाता (निपुण) जादूगर है।[1]

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ ۖ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

(११०) वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकलना चाहता है फिर तुम लोग क्या विचार देते हो ?

قَالُوٓا۟ أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِى ٱلْمَدَآئِنِ حَٰشِرِينَ ﴿١١١﴾

(१११) उन्होंने कहा कि आप उसे तथा उसके भाई को समय दीजिए तथा नगरों में एकत्र कर्ताओं को भेज दीजिए।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَٰحِرٍ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

(११२) कि वे सभी माहिर जादूगरों को आप के समक्ष लाकर उपस्थित करें।[2]

وَجَآءَ ٱلسَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوٓا۟ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ ٱلْغَٰلِبِينَ ﴿١١٣﴾

(११३) तथा जादूगर फ़िरऔन के पास आये और कहा कि यदि हम सफल हो गये तो क्या हमारे लिए कोई प्रतिकार है ?

[1]चमत्कार को देख कर ईमान लाने के बजाय फ़िरऔन के सभासदों ने उसे जादू कह दिया कि यह तो बड़ा दक्ष जादूगर है जिससे उसका उद्देश्य तुम्हारा राज्य समाप्त करना है। क्योंकि आदरणीय मूसा के समय में जादू का सामान्य प्रचलन हो रहा था, इसलिए चमत्कार को भी उन्होंने जादू समझा, जिन में लेश मात्र भी मनुष्य का अधिकार नहीं होता। शुद्ध रूप से अल्लाह की इच्छा से ही प्रदर्शित होते हैं। इस प्रकार इस विषय से फ़िरऔन के दरबारियों के लिए आदरणीय मूसा के विरुद्ध फ़िरऔन को बहकाने का अवसर प्राप्त हो गया।

[2]आदरणीय मूसा के समय में जादूगरों को बड़ा सम्मान प्राप्त था, इसीलिए आदरणीय मूसा द्वारा प्रस्तुत चमत्कार को भी उन्होंने जादू समझा तथा जादू के द्वारा उसके काट की योजना बनायी। जिस प्रकार से अन्य स्थान पर फ़रमाया कि फ़िरऔन तथा उसके दरबारियों ने कहा, "हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि अपने जादू की शक्ति से हमें अपनी धरती से निकाल दे अतः हम भी इस जैसा जादू इसके मुकाबिले में लायेंगे, इसके लिए किसी उचित स्थान तथा समय का निर्धारण हम स्वयं करें जिसका दोनों पालन करें। आदरणीय मूसा ने कहा कि नौरोज़ का दिन तथा चाश्त का समय है, इस हिसाब से लोग एकत्रित हो जायें।" (सूरः ताहा- ५७ से ५९)

(११४) उसने कहा हाँ, और तुम सब निकट-वर्ती लोगों में हो जाओगे ।[1]

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿١١٤﴾

(११५) उन (जादूगरों) ने कहा कि ऐ मूसा चाहे आप डालिए अथवा हम ही डालें ।[2]

قَالُوا يَٰمُوسَىٰٓ إِمَّآ أَن تُلْقِىَ وَإِمَّآ أَن نَّكُونَ نَحْنُ ٱلْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

(११६) (मूसा) ने कहा कि तुम ही डालो ।[3] तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी तथा उन को भयभीत कर दिया तथा एक प्रकार का बड़ा जादू दिखाया ।[4]

قَالَ أَلْقُوا۟ ۖ فَلَمَّآ أَلْقَوْا۟ سَحَرُوٓا۟ أَعْيُنَ ٱلنَّاسِ وَٱسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَآءُو بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

---

[1]जादूगर चूँकि दुनिया पाने की इच्छा रखते थे इसलिए उन्होंने जादू का प्रशिक्षण लिया था, इसलिए अच्छा अवसर देखा कि राजा को हमारी आवश्यकता हुई है, क्यों न अवसर का लाभ उठा कर अधिक से अधिक लाभ उठायें । अत: उन्हों ने सफलता के पश्चात उसके बदले में माँग प्रस्तुत कर दी, जिस पर फ़िरऔन ने कहा कि केवल धन ही नहीं मिलेगा अपितु हमारे निकटवर्ती लोगों में सम्मिलित हो जाओगे ।

[2]जादूगरों ने यह अधिकार अपने ऊपर पूर्ण भरोसा होने के कारण दिया । वे पूर्ण विश्वास करते थे कि उनके मुक़ाबिले में मूसा का चमत्कार जिसे वे जादू ही समझते थे, कोई स्थान नहीं रखता तथा यदि मूसा को पहले अपनी कला का प्रदर्शन का अवसर दे भी दिया, तो उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा । हम उसकी कला का तोड़ किसी प्रकार कर देंगे ।

[3]परन्तु मूसा अलैहिस्सलाम चूँकि अल्लाह के रसूल थे तथा उन्हें अल्लाह का समर्थन प्राप्त था, इसलिए उन्हें अपने अल्लाह पर पूर्ण विश्वास था । अत: उन्होंने बिना किसी चिन्ता तथा विचार के उन से कह दिया कि तुम्हें जो कुछ दिखाना हो दिखाओ । इसके अतिरिक्त इसमें यह बुद्धिमानी भी हो सकती है कि जादूगरों के द्वारा प्रस्तुत जादू का तोड़ यदि आदरणीय मूसा द्वारा प्रदर्शित होगा तो वह लोगों को अधिक प्रभावित करेगा, जिससे उनकी सच्चाई स्पष्ट हो जायेगी तथा लोगों को ईमान लाने में कठिनाई नहीं होगी ।

[4]कुछ पुरातत्व में बताया गया है कि इन जादूगरों की संख्या सत्तर हज़ार थी । प्रत्यक्ष रूप से यह संख्या अतिश्योक्ति से वंचित नहीं, जिनमें से प्रत्येक ने एक लाठी तथा एक रस्सी मैदान में फेंकी जो देखने वालों को दौड़ती प्रतीत हुई थीं । यह अर्थात उनके द्वारा प्रदर्शित बहुत बड़ा जादू था ।

(११७) तथा हमने मूसा को आदेश किया कि अपनी छड़ी डाल दो, फिर वह अकस्मात उन के स्वांग को निगलने लगी।[1]	وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوسَىٰٓ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ۖ فَإِذَا هِىَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾
(११८) अत: सत्य प्रकट हो गया तथा उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा।	فَوَقَعَ ٱلْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا۟ يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾
(११९) अत: वह लोग इस अवसर पर हार गये और अति अपमानित होकर फिरे।	فَغُلِبُوا۟ هُنَالِكَ وَٱنقَلَبُوا۟ صَٰغِرِينَ ﴿١١٩﴾
(१२०) तथा जादूगर सजदे में गिर गये।	وَأُلْقِىَ ٱلسَّحَرَةُ سَٰجِدِينَ ﴿١٢٠﴾
(१२१) कहने लगे हम ईमान लाये अखिल जगत के प्रभु पर।	قَالُوٓا۟ ءَامَنَّا بِرَبِّ ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿١٢١﴾
(१२२) जो मूसा तथा हारून का भी प्रभु है।[2]	رَبِّ مُوسَىٰ وَهَٰرُونَ ﴿١٢٢﴾
(१२३) फ़िरऔन ने कहा तुम उस (मूसा) पर ईमान मेरी आज्ञा से पहले ले आए नि:संदेह यह एक षड़यन्त्र है जो तुम ने नगर में उसके	قَالَ فِرْعَوْنُ ءَامَنتُم بِهِۦ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّ هَٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِى ٱلْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا۟

[1]परन्तु यह जो कुछ भी था, एक काल्पनिक, जादूगरी, तथा जादू था, जो वास्तविकता का सामना नहीं कर सकता था। अत: मूसा के लाठी डालते ही सब कुछ समाप्त हो गया तथा लाठी ने एक भयानक अजगर का रूप धारण करके सब कुछ निगल लिया।

[2]जादूगरों ने, जो जादू की कला तथा उसकी असली वास्तविकता को जानते थे, यह देखा तो समझ गये कि मूसा ने जो कुछ यहाँ प्रस्तुत किया है, जादू नहीं है, यह वास्तव में अल्लाह के दूत हैं तथा अल्लाह की सहायता से ही यह चमत्कार प्रस्तुत किया है जिसने एक क्षण में हम सभी की कला पर पानी फेर दिया। अत: उन्हों ने मूसा पर ईमान लाने की घोषणा कर दी। इससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि असत्य-असत्य है, चाहे उस पर कितने ही आकर्षक वस्त्र चढ़ा दिये जायें तथा सत्य-सत्य ही है, चाहे उस पर कितने ही पट डाल दिये जायें। अन्तिम विजय सत्य की होती है।

مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾

निवासियों को उससे निकालने के लिये रच लिया है। अतः तुम्हें शीघ्र पता चल जायेगा।[1]

لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾

(१२४) मैं तुम्हारे एक ओर का हाथ तथा दूसरे ओर की टाँग काटूँगा। फिर तुम सबको फाँसी पर लटका दूँगा।[2]

قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾

(१२५) (उन्होंने) उत्तर दिया कि हम (मर कर) अपने प्रभु के पास ही जायेंगे।[3]

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۗ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾

(१२६) तथा तुमने हम में यही दोष तो देखा है कि हमने अपने परमेश्वर की आयतों (लक्षणों) के प्रति विश्वास कर लिया[4] जब वह हमारे पास आ गईं, हे हमारे परमेश्वर हम

---

[1]यह जो कुछ हुआ फ़िरऔन के लिए बड़ी आश्चर्यचकित विषय था, इसलिए उसे और कुछ न समझ में आयी यह कह दिया कि तुम सब आपस में मिले हुए हो तथा उसका उद्देश्य हमारे राज्य को समाप्त करना है। अच्छा, इसका परिणाम निकट भविष्य में तुम्हें ज्ञात होगा।

[2]अर्थात दायाँ पाँव तथा बायाँ हाथ अथवा बायाँ पाँव तथा दायाँ हाथ, फिर यही नहीं फाँसी पर चढ़ा कर दूसरों के लिए शिक्षा बना दूँगा।

[3]इसका भावार्थ यह है कि यदि तू हमारे साथ ऐसा व्यवहार करेगा, तो तुझे भी इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे इस अपराध का कठोर दण्ड देगा, इसलिए कि हम सभी को मरकर उसी के पास जाना है, उसके दण्ड से कौन बच सकता है ? अर्थात फ़िरऔन को दुनिया की यातना के सापेक्ष आख़िरत की यातना से डराया गया है। दूसरा भावार्थ है कि मृत्यु तो हमें आयेगी ही इससे क्या अन्तर पड़ता है कि फाँसी के फंदे से आये अथवा किसी अन्य साधन से।

[4]अर्थात तेरे निकट हमारा यही दोष है जिससे तू हम से क्रोधित है तथा हमें दण्ड देने को है। जबकि यह कोई दोष नहीं यह तो गुण है कि जब वास्तविकता हमारे समक्ष आ गयी, तो हमने उसकी तुलना में दुनिया के सारे लाभ ठुकरा दिये तथा वास्तविकता को अपना लिया। फिर उन्होंने अपने मुख फ़िरऔन की ओर से मोड़ कर अल्लाह की ओर कर लिये तथा अल्लाह के दरबार में प्रार्थना करने लगे।

पर धैर्य बहा दे[1] तथा हमें मुसलमान ही रहते हुए मृत्यु दे ।[2]

وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ؕ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْىٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ ﴿۱۲۷﴾

(१२७) तथा फ़िरऔन की जाति के प्रमुखों ने कहा कि क्या आप मूसा एवं उसकी जाति को यूं ही रहने देंगे ताकि प्रदेश में उपद्रव करें[3] तथा आप को एवं आपके देवताओं को त्याग दें ।[4] उसने कहा हम उन के पुत्रों की हत्या करेंगे तथा उनकी स्त्रियों को जीवित रहने देंगे । हम उन पर प्रभावी हैं ।[5]

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ

(१२८) मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह (तआला) की सहायता लो तथा धैर्य रखो यह धरती अल्लाह (तआला) की है, वह

---

[1]ताकि हम तेरे इस शत्रु की यातनाओं को सहन कर लें तथा सत्य से सम्बन्धित एवं ईमान पर दृढ़ता से स्थापित रहें ।

[2]इस सांसारिक परीक्षा से हमारे अन्दर ईमान के लिए न परिवर्तन आये न किसी अन्य विषय में हम फंस जायें ।

[3]यह प्रत्येक काल के भ्रष्टाचारियों का कार्य रहा है कि वे ईमानवालों को उपद्रवी तथा उनके ईमान के आमन्त्रण तथा एकेश्वरवाद (तौहीद) को उपद्रव से तुलना करते हैं फ़िरऔन के अनुयायियों ने भी यही किया ।

[4]फ़िरऔन को भी स्वयं को यद्यपि प्रभु होने का दावा था ﴿اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى﴾ "मैं तुम्हारा बड़ा प्रभु हूँ । (वह कहा करता था) परन्तु दूसरे छोटे-छोटे देवता भी थे जिन के द्वारा लोग फ़िरऔन की निकटता प्राप्त करते थे ।

[5]हमारे इस प्रबन्ध में यह रुकावट नहीं डाल सकते । पुत्रों की हत्या का यह कार्य क्रम पुन: फ़िरऔन के अनुयायियों के कहने से बनाया गया । इससे पूर्व भी जब मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म नहीं हुआ था, इस्राईल की सन्तानों के नवजात शिशु की हत्या करना प्रारम्भ कर दिया था । मूसा के जन्म के पश्चात अल्लाह ने उनको बचाने का प्रबन्ध किया कि मूसा को स्वयं फ़िरऔन के महल में पहुँचा दिया तथा उसकी गोद में पालन-पोषण करवाया ।

يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

अपने भक्तों में से जिसे चाहता है स्वामित्व प्रदान कर देता है तथा अन्तिम सफलता उन्हीं की होती है जो अल्लाह से डरते हैं।[1]

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٩﴾

(१२९) उन्होंने कहा कि आप के आने से पूर्व भी[2] हमें कष्ट दिया गया तथा आप के आगमन के पश्चात भी।[3] उन्होंने कहा कि शीघ्र ही अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं का विनाश कर देगा तथा इस धरती का स्वामित्व तुम को देगा फिर यह देखेगा कि तुम्हारा आचरण कैसा है ?[4]

وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾

(१३०) तथा हमने फ़िरऔन वालों को सूखे एवं फलों की कमी द्वारा घेर लिया ताकि वह शिक्षा प्राप्त कर लें।[5]

---

[1]जब फ़िरऔन की ओर से पुन: अत्याचार प्रारम्भ हुआ तो आदरणीय मूसा ने अपनी जाति के लोगों को अल्लाह की सहायता प्राप्त करने तथा धैर्य रखने की शिक्षा दी कि यदि तुम सत्य मार्ग पर रहे तो अन्तत: धरती का राज्य तुम्हें ही प्राप्त होगा।

[2]यह संकेत उन अत्याचारों की ओर है, जो मूसा के जन्म से पूर्व उन पर होते रहे।

[3]जादूगरों की घटना के पश्चात अत्याचार का यह नया दौर प्रारम्भ हुआ, जो मूसा अलैहिस्सलाम के आने के पश्चात प्रारम्भ हुआ।

[4]आदरणीय मूसा अलैहिस्सलाम ने सांत्वना दी कि घबराओ नहीं, तुम्हारे शत्रु शीघ्र ही नष्ट कर दिये जायेंगे, तथा धरती पर स्वामित्व तुम्हें प्राप्त होगा। फिर तुम्हारी परीक्षा का एक नया दौर प्रारम्भ होगा। अभी तो कष्टों तथा कठिनाई से परीक्षा ली जा रही है, फिर तुम्हें पुरस्कृत तथा कृपा की वर्षा करके तथा स्वामित्व प्रदान कर के तुम्हारी परीक्षा ली जायेगी।

[5]फ़िरऔन की सन्तान से तात्पर्य फ़िरऔन के अनुयायी हैं। तथा सेनीन (سِنِين) से अकाल अथवा सूखा अर्थात वर्षा की कमी तथा वृक्षों में कीड़े लग जाने के कारण पैदावार में कमी है। इस परीक्षा से उद्देश्य यह था कि शायद वह इस अत्याचार तथा घमण्ड से रुक जायें जिसमें वे लिप्त हैं।

فَإِذَا جَاءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَٰذِهِ ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَىٰ وَمَن مَّعَهُ ۗ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

(१३१) यदि उनके पास भलाई आती है तो कहते हैं कि यह हमारे लिए होना ही चाहिए तथा यदि विपदा आती है तो मूसा तथा उनके अनुयायियों से अपशगुन लेते हैं[1] सुन लो उन का अपशगुन अल्लाह के पास है[2] किन्तु उन में अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

(१३२) तथा उन्होंने कहा, कि हमारे पास जो भी निशानी हम पर जादू चलाने के लिये लाओ हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे।[3]

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ

(१३३) फिर हमने उन पर तूफ़ान तथा टिड्डियाँ एवं जूयें तथा मेढक एवं रक्त भेजा

---

[1] حَسَنَة (हसन:) से तात्पर्य अनाज तथा फलों की बहुतायत तथा سَيِّئَة का अर्थ है बुराई, जिससे तात्पर्य हसन: के विपरीत अकाल, सूखा तथा पैदावार में कमी है حَسَنَة (हसन:) की सम्पूर्ण विशेषता स्वयं ले लेते कि यह हमारे प्रयत्नों का परिणाम है तथा विपदा का कारण आदरणीय मूसा तथा उनके अनुयायियों को बताते कि यह तुम लोगों के अशुभ प्रभाव हमारे देश पर पड़ रहे हैं।

[2] طائر का अर्थ है "उड़ने वाला" अर्थात पक्षी। क्यों कि वे लोग पक्षी के दायें तथा बायें उड़ने से शुभ तथा अशुभ लिया करते थे। इसलिए यह शब्द पूर्ण रूप से 'फ़ालनामा' के लिए प्रयोग होने लगा तथा यहाँ यह इसी अर्थ में प्रयोग हुआ है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अच्छाई अथवा बुराई, खुशहाली अथवा अकाल उन्हें जो पहुंचता है, उसके कारण अल्लाह तआला की ओर से हैं, मूसा तथा उनके अनुयायियों की ओर से नहीं हैं। ﴿طَائِرُهُمْ عِندَ اللَّهِ﴾ का अर्थ होगा कि अपशगुन का कारण अल्लाह के ज्ञान में है तथा वह उनका कुफ़्र तथा अवहेलना है न कि कुछ अन्य अथवा अल्लाह की ओर से है तथा इसका कारण उनका कुफ़्र है।

[3] यह उसी कुफ़्र तथा झुठलाने का प्रदर्शन है जिसमें वे ग्रसित हुए थे तथा चमत्कार तथा अल्लाह की निशानियों को अब भी जादूगरी कहते तथा कहलवाते थे।

وَالدَّمَ ءَايَٰتٍ مُّفَصَّلَٰتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾

अलग अलग निशानियाँ[1] फिर उन्होंने अहंकार किया तथा वह पापी लोग थे।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَٰمُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ لَئِن كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ﴿١٣٤﴾

(१३४) तथा जब उन पर कोई प्रकोप आता तो कहते कि हे मूसा हमारे लिये अपने परमेश्वर से उस वचन के द्वारा जो आप को दिया है प्रार्थना कर दीजिये, यदि आप ने हम से प्रकोप दूर कर दिया तो हम अवश्य आप पर ईमान ले आयेंगे तथा आपके साथ इस्राईल के पुत्रों को भेज देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ

(१३५) फिर जब हम उन से उस प्रकोप को एक विशेष समय तक कि उस तक उनको

---

[1]तूफ़ान से तात्पर्य है बाढ़, अत्यधिक वर्षा, जिससे हर वस्तु डूब गयी अथवा मृतकों की अधिक संख्या है। जिससे प्रत्येक घर में दुख के बादल छा गये। جراد (जराद) टिड्डी को कहते हैं। टिड्डी दल का आक्रमण फसलों की बरबादी का सूचक है तथा इसके लिए प्रसिद्ध है। ये टिड्डियाँ उन की फसलों तथा फलों को खाकर चट कर जातीं। قُمَّل (कुम्मल) से तात्पर्य 'जूँ' जो मनुष्य के शरीर तथा कपड़ों तथा बालों में हो जाती हैं अथवा घुन का कीड़ा जो अनाज में लग जाता है, तो उसके अधिकतर भाग को समाप्त देता है। जूँ से मनुष्य को घृणा भी होती है तथा उसकी अधिकता से अत्यधिक कठिनाई भी, तथा जब यह प्रकोप के रूप में हो तो उसकी कठिनाई का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार घुन का प्रकोप भी अर्थिक स्थिति को खोखला कर देने के लिए पर्याप्त है। ضفادع अरबी भाषा में ضفدع (दिफदअ:) का बहुवचन है। यह मेंढक को कहते हैं, जो पानी, धरती तथा झोपडियों के छप्परों में रहता है। यह मेंढक उनके भोजन मे, शैय्या पर, रखे हुए अनाजों में अर्थात प्रत्येक स्थान पर तथा प्रत्येक ओर मेंढक ही मेंढक हो गये, जिससे उनका खाना-पीना सोना तथा विश्राम करना कठिन हो गया। دَمٌ (दम) का अर्थ रक्त है जिसका तात्पर्य है कि पानी का रक्त बन जाना, इस प्रकार पानी पीना उनके लिए असम्भव हो गया। कुछ ने रक्त का तात्पर्य नकसीर का रोग लिया है अर्थात प्रत्येक व्यक्ति की नाक से रक्त प्रवाहित हो गया। آيات مُفَصَّلات यह स्पष्ट तथा भिन्न-भिन्न चमत्कार थे, जो समय-समय से उनके पास आये।

هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿١٣٥﴾

पहुँचना था, हटा देते, तो वे तुरंत वचन भंग करने लगते ।[1]

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٣٦﴾

(१३६) फिर हमने उन से बदला लिया अर्थात उनको समुद्र में डूबो दिया, इस कारण कि वे हमारी निशानियों को झुठलाते थे तथा उनसे अत्यन्त असावधानी बरतते थे ।[2]

وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ۗ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى

(१३७) तथा हमने उन लोगों को जो अति निर्बल गिने जाते थे[3] उस धरती के पूर्व एवं पश्चिम का अधिपति बना दिया जिसमें हमने विभूतियाँ रखी हैं ।[4] तथा आपके पोषक का

---

[1]अर्थात एक प्रकोप आता तो उससे तंग आकर मूसा के पास आते, उनकी प्रार्थना से वह टल जाता तो ईमान लाने के बजाय, फिर उस कुफ्र तथा शिर्क (बहुदेववाद) में दृढ़ रहते । फिर दूसरा प्रकोप आ जाता, तो फिर इसी प्रकार करते, इस प्रकार कुछ-कुछ समय के अन्तर पर उन पर पाँच प्रकार के प्रकोप आये । परन्तु उनके हृदय में जो गर्व तथा मस्तिष्क में जो घमण्ड था, वह सत्य के मार्ग पर आने के लिए उनके पैर में बेड़ी बना रहा तथा इतनी स्पष्ट निशानियाँ देखने के उपरान्त भी वह ईमान की दौलत से वंचित ही रहे ।

[2]इतनी बड़ी-बड़ी निशानियों के उपरान्त वह ईमान लाने तथा अचेत निद्रा से सचेत होने को तैयार नहीं हुए । अन्ततः उन्हें समुद्र में डूबो दिया गया, जिसका विवरण क़ुरआन मजीद में विभिन्न स्थानों में विद्यमान है ।

[3]अर्थात इस्राईल की सन्तान को जिन्हें फ़िरऔन ने दास बना रखा था । इस कारण वास्तव में वे मिस्र में कमजोर समझे जाते थे क्योंकि वे पराजित तथा दास थे । परन्तु जब अल्लाह ने चाहा तो उसी पराजित तथा दास जाति को धरती का उत्तराधिकारी बना दिया । ﴿وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاۤءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَاۤءُ﴾ (सूरः आले इमरान:२६)

[4]धरती से तात्पर्य सीरिया का क्षेत्र फ़िलस्तीन है, जहाँ अल्लाह तआला ने अमालक़ः के पश्चात इस्राईल की सन्तान को विजय प्रदान की । सीरिया में इस्राईल की सन्तान आदरणीय मूसा तथा हारून के देहान्त के पश्चात उस समय गये जब आदरणीय यूशआ बिन नून ने अमालकः को पराजित करके इस्राईल की सन्तान के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया । तथा धरती के उस भाग में अल्लाह की कृपा रही, अर्थात सीरिया

بَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ بِمَا صَبَرُواْۖ وَدَمَّرۡنَا مَا كَانَ يَصۡنَعُ فِرۡعَوۡنُ وَقَوۡمُهُۥ وَمَا كَانُواْ يَعۡرِشُونَ ١٣٧

शुभ वचन बनी इस्राईल के विषय में उनकी सहनशीलता के कारण पूरा हो गया[1] तथा हमने फ़िरऔन एवं उसके निर्मित उद्योगों को तथा जो ऊँचे भवन निर्माण करते थे सब को तहस-नहस कर दिया ।[2]

وَجَٰوَزۡنَا بِبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ ٱلۡبَحۡرَ فَأَتَوۡاْ عَلَىٰ قَوۡمٖ يَعۡكُفُونَ عَلَىٰٓ أَصۡنَامٖ لَّهُمۡۚ قَالُواْ يَٰمُوسَى

(१३८) तथा हम ने बनू इस्राईल (इस्राईल के पुत्रों) को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका एक जाति पर गुज़र हुआ जो अपने कुछ बुतों (प्रतिमाओं) से लगे बैठे थे। कहने

के क्षेत्र में जो अधिकतर नबियों का निवास स्थान तथा समाधि स्थली रहा, तथा भौतिक सुख सम्पन्नता एवं खुशहाली में भी श्रेष्ठ रहा है। अर्थात भौतिक तथा अलौकिक दोनों प्रकार की विभूतियों से वह धरती माला-माल रही है। मशारिक़ अरबी भाषा में मशरिक़ का तथा मग़ारिब मग़रिब का बहुवचन है। यद्यपि पूर्व तथा पश्चिम एक-एक ही हैं। बहुवचन से तात्पर्य समृद्धिशाली धरती के पूर्वी तथा पश्चिमी भाग हैं अर्थात पूर्व तथा पश्चिम दिशा।

[1]यह वचन वही है जो आदरणीय मूसा के मुख से इससे पूर्व आयत संख्या १२८ तथा १२९ में किया गया है। तथा सूरः क़सस में भी

﴿وَنُرِيدُ أَن نَّمُنَّ عَلَى ٱلَّذِينَ ٱسۡتُضۡعِفُواْ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنَجۡعَلَهُمۡ أَئِمَّةٗ وَنَجۡعَلَهُمُ ٱلۡوَٰرِثِينَ ۞ وَنُمَكِّنَ لَهُمۡ فِي ٱلۡأَرۡضِ وَنُرِيَ فِرۡعَوۡنَ وَهَٰمَٰنَ وَجُنُودَهُمَا مِنۡهُم مَّا كَانُواْ يَحۡذَرُونَ﴾

"हम चाहते हैं कि उन पर उपकार करें जो धरती में कमजोर समझे जाते हैं तथा उनको नेतृत्व प्रदान करें तथा राज्य का उत्तराधिकारी बनायें तथा राज्य में उन्हें शक्ति तथा समृद्धि प्रदान करें तथा फ़िरऔन एवं हामान तथा उनकी सेना को वह राज दिखा दें जिससे वे डरते हैं।" (सूरः अल-क़सस-५ तथा ६)

तथा यह कृपा और उपकार उस धैर्य के कारण हुआ जिसका प्रदर्शन उन्होंने फ़िरऔन के अत्याचार को सहन करके किया।

[2]उद्योग से तात्पर्य कल-कारखाने, भवन तथा हथियार आदि हैं तथा يَعۡرِشُون "जो वह ऊंचा उठाते थे" से तात्पर्य ऊँचे-ऊँचे भवन भी हो सकते हैं। तथा अंगूरों आदि की लतायें भी जो वह छप्परों पर चढ़ाते थे। अर्थ यह हुआ कि उनके शहरों के ऊँचे-ऊँचे भवन, उद्योग, हथियार तथा अन्य सामान भी नष्ट कर दिया तथा उनके बाग़ भी।

اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿١٣٨﴾

लगे कि हे मूसा ! हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य निर्धारित कर दीजिए जैसे उनके यह देवता हैं आप ने फ़रमाया वास्तव में तुम लोगों में बड़ी मूर्खता है ।[1]

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٩﴾

(१३९) यह लोग जिन कार्य में लगे हुए हैं वह नाश कर दिया जायेगा तथा उनका यह काम मात्र निर्मूल है ।[2]

قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٠﴾

(१४०) फ़रमाया कि क्या अल्लाह (परमेश्वर) के सिवाय और किसी को तुम्हारा पूज्य निर्धारित कर दूँ, यद्यपि उसने समस्त विश्व वासियों पर तुम्हें प्रधानता दी है ।[3]

وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ

(१४१) तथा वह समय याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन के अनुयायियों से बचा लिया जो तुम्हें कड़ी यातनायें देते थे, तुम्हारे पुत्रों को हत कर देते थे तथा तुम्हारी नारियों को

---

[1]इससे बड़ी अज्ञानता तथा मूर्खता और क्या होगी कि जिस अल्लाह ने उन्हें फ़िरऔन जैसे बड़े शत्रु से न केवल स्वतंत्रता प्रदान करायी अपितु उनकी आँखों के समक्ष उसे उसकी सेना के साथ डूबो दिया तथा उन्हें चमत्कारिक रूप से समुद्र पार करा दी। वे समुद्र के पार करते ही अल्लाह को भूल कर स्वयं बनाये गये देवता खोजने लगे। कहते हैं यह मूर्तियाँ गाय के आकृति की थीं, जो पत्थर की बनी थीं।

[2]अर्थात इन मूर्तिपूजकों के व्यवहार ने तुम्हें भी धोखे में रख दिया है, उनके भाग्य में विनाश तथा उनके कर्म व्यर्थ तथा हानिकारक हैं।

[3]क्या जिस अल्लाह ने तुम पर इतने उपकार किये तथा अखिल जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की, उसे छोड़कर मैं तुम्हारे लिए पत्थर से निर्मित मूर्तियाँ खोजूँ ? अर्थात यह कृतघ्नता तथा अनुपकार मैं कैसे कर सकता हूँ ? अगली आयतों में कुछ अन्य उपकारों की चर्चा है।

مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾

जीवित छोड़ देते थे तथा इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी ।[1]

وَوَٰعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَٰثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَٰتُ رَبِّهِۦٓ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَٰرُونَ ٱخْلُفْنِى فِى قَوْمِى وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ ٱلْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾

(१४२) तथा हम ने मूसा को तीस रात्रि का वचन दिया तथा दस रात्रि अधिक से उसको पूरा किया इस प्रकार उनके पोषक का समय पूरा चालीस रात्रि का हो गया[2] तथा मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे (जाने के) पश्चात इनकी (समुदाय को) व्यवस्था करना एवं सुधार करते रहना तथा उपद्रवी लोगों के मार्ग का अनुसरण न करना ।[3]

وَلَمَّا جَآءَ مُوسَىٰ لِمِيقَٰتِنَا وَكَلَّمَهُۥ رَبُّهُۥ قَالَ رَبِّ أَرِنِىٓ أَنظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَن تَرَىٰنِى وَلَٰكِنِ ٱنظُرْ إِلَى ٱلْجَبَلِ فَإِنِ ٱسْتَقَرَّ

(१४३) तथा जब मूसा हमारे समय पर आये और उनके पोषक ने उनसे बातें की तो उन्होंने विनय किया कि हे मेरे पोषक ! मुझे अपना दर्शन करा दे मैं तुझे एक पल देख लूँ आदेश हुआ कि तुम मुझको कदापि नहीं देख

---

[1]यह वही परीक्षायें हैं जिनकी चर्चा सूर: अल-बक़र: में आ चुकी है तथा सूर: इब्राहीम में भी आयेगी ।

[2]फ़िरऔन तथा उसकी सेना को डूबो कर नष्ट कर देने के पश्चात यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि इस्राईल की सन्तान को मार्गदर्शन तथा निर्देश के लिए कोई किताब उन्हें प्रदान की जाये । अत: अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा को तूर पर्वत पर तीस रात्रि के लिए बुलाया जिसमें दस रात्रि को बढ़ाकर चालीस कर दिया गया । आदरणीय मूसा ने जाते समय, आदरणीय हारून को जो उनके भाई थे तथा नबी भी अपना उत्तरदायी नियुक्त किया ताकि वह इस्राईल की संतान को मार्गदर्शन तथा सुधार का कार्य करते रहें तथा उन्हें हर प्रकार के उपद्रव अथवा षडयन्त्र से बचायें । इस आयत में यही वर्णन किया गया है ।

[3]आदरणीय हारून स्वयं नबी थे सुधार करना उनके उत्तरदायित्व में सम्मिलित था, आदरणीय मूसा ने मात्र चेतावनी तथा सावधानी के लिये यह शिक्षायें दीं यहाँ मिकात से तात्पर्य निर्धारित समय है ।

مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّا اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٤٣﴾

सकोगे ।[1] परन्तु तुम इस पर्वत की ओर देखते रहो । यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे, फिर उन के पोषक ने जब उस पर प्रकाश किया तो तजल्ली (प्रकाश-आभा) ने उसे खंडित कर दिया एवं मूसा मूर्छित होकर गिर पड़े[2] फिर जब सचेत हुये तो कहा कि नि:संदेह आप पवित्र हैं मैं आप से क्षमा-याचना करता हूँ तथा मैं सर्वप्रथम इस पर विश्वास करता हूँ ।[3]

---

[1]जब मूसा तूर पर गये तथा अल्लाह से सीधे बात की तो उनके दिल में अल्लाह का दर्शन करने की भावना उत्पन्न हुई तथा अपनी इस भावना को﴿ رَبِّ أَرِنِيْ ﴾कह कर व्यक्त किया "तू मुझे अपना दर्शन करा दे", उत्तर मिला ﴿ لَنْ تَرٰىنِيْ ﴾ तू मुझे नहीं देख सकता," मुअतजिला (एक पथभ्रष्ट समुदाय) ने इस से तर्क देते हुये कहा कि لَنْ शब्द सदा इंकार के लिये आता है इस लिये अल्लाह का दर्शन न आलोक (लोक) में संभव है न परलोक में । किन्तु यह विचार सहीह हदीसों के विपरीत है । लगातार सही विश्वस्त हदीसों से प्रमाणित है कि परलोक में ईमान वाले अल्लाह का दर्शन करेंगे तथा स्वर्ग में भी अल्लाह के दर्शन से सम्मानित होंगे, सभी अहले सुन्नत का यही विश्वास है तथा इस दर्शन के नकार का संबन्ध मात्र इस संसार (लोक) से है । कोई मानवी आँख संसार में अल्लाह के दर्शन का सामर्थ्य नहीं रखती, किन्तु परलोक में अल्लाह इन आँखों में इतनी शक्ति उत्पन्न कर देगा कि वह परम अल्लाह के प्रकाश को सहन कर सके ।

[2]अर्थात वह पर्वत भी प्रभु की ज्योति को सहन न कर सका तथा मूसा मूर्छित हो कर गिर पड़े । हदीस में आता है कि क़ियामत वाले दिन सभी लोग मूर्छित होंगे (यह मूर्छा इमाम इब्ने कसीर के अनुसार प्रलय के मैदान में उस समय होगी जब अल्लाह तआला निर्णय करने के लिये प्रकट होगा ।) तथा जब चेतना आयेगी तो मैं सर्वप्रथम उस समय चेतना शक्ति प्राप्त करने वालों में हूँगा, मैं देखूँगा कि आदरणीय मूसा अर्श का स्तम्भ पकड़े खड़े हैं, मुझे यह ज्ञात नहीं कि वह मुझ से पूर्व चेतना में आये अथवा उन्हें तूर पर्वत की मूर्छा के परिणाम स्वरूप प्रलय की मूर्छा से पृथक रखा गया (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-आराफ़ सहीह मुस्लिम बाब फ़ज़ाएले मूसा अलैहिस्सलाम)

[3]तेरी महानता तथा श्रेष्ठता का एवं इस बात का कि मैं तेरा शक्तिहीन भक्त हूँ, दुनिया में तेरे दर्शन की शक्ति भी नहीं है ।

(१४४) आदेश हुआ कि, हे मूसा ! मैंने अपने दूतत्व एवं अपने साथ वार्तालाप से अन्य लोगों पर तुम्हें विशेषता दी है। तो जो कुछ मैं ने तुमको प्रदान किया है उसे ग्रहण करो एवं कृतज्ञता करो।[1]

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ

(१४५) और हमने कुछ पट्टिकाओं पर प्रत्येक प्रकार की शिक्षायें तथा प्रत्येक वस्तु का विवरण उन को लिख कर दिया,[2] तुम उनको पूरी शक्ति से पकड़ लो, तथा अपनी जाति को आदेश करो कि उन के उत्तम आदेशों पर कार्यरत हों,[3] अब अति शीघ्र तुम लोगों को उन अवज्ञाकारियों का स्थान दिखाता हूँ।[4]

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ۗ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ

(१४६) मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों से विमुख ही रखूगाँ जो संसार में अभिमान करते हैं जिसका उन्हें कोई अधिकार नहीं यदि वह सभी निशानियाँ (लक्षण) देख भी लें

سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ

---

[1]यह अल्लाह तआला से वार्ता का दूसरा अवसर था जिससे आदरणीय मूसा को सम्मानित किया गया। इससे पूर्व जब आग लेने गये थे, तो अल्लाह तआला से वार्तालाप हुई थी तथा दूतत्व प्रदान किया गया था।

[2]अर्थात तौरात पट्टिकाओं के रूप में प्रदान की गयी थी जिसमें उनके लिए धर्मिक आदेश थे, कहने तथा करने के एवं शिक्षा-दीक्षा का पूर्ण विवरण था।

[3]अर्थात छूट की खोज में न रहो, जैसा कि आलसियों की दशा होती है।

[4]دار (दार) से तात्पर्य या तो परिणाम अर्थात विनाश है अथवा इससे तात्पर्य यह है कि दुराचारियों के देश पर तुम्हें राज दूँगा तथा इस से तात्पर्य सीरिया देश है जिस पर उस समय अमालिका का राज्य था जो अल्लाह के अवज्ञाकारी थे।

وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٤٦﴾

तब भी उन पर विश्वास नहीं करेंगे।[1] तथा यदि वे सत्य मार्ग का दर्शन कर लें तो उसे अपना मार्ग न बनायें, और यदि वे कुमार्ग को देख लें तो उसको अपना मार्ग बना लें।[2] यह इस कारण है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तथा उनसे अचेत रहे।[3]

---

[1]गर्व का अर्थ है कि अल्लाह की आयतों तथा आदेशों की तुलना में अपने आपको श्रेष्ठ समझना तथा अन्य लोगों को हीन समझना। यह गर्व मनुष्य को शोभा नहीं देता है, क्योंकि अल्लाह स्रष्टा है तथा वह उसकी सृष्टि। सृष्टि हो कर स्रष्टा से तुलना करना तथा उसके आदेशों की अवहेलना तथा असावधानी किसी प्रकार भी उचित नहीं है। इसलिए गर्व अल्लाह को कदापि प्रिय नहीं है। इस आयत में गर्व का परिणाम बताया गया है कि अल्लाह तआला उन्हें अपनी आयतों से दूर ही रखता है तथा फिर वे इतने दूर हो जाते हैं कि किसी भी प्रकार की निशानी उन्हें सत्य की ओर बुलाने में सफल नहीं होती। जैसा कि अन्य स्थान पर फ़रमाया :

﴿ إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۞ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴾

"जिन पर तेरे प्रभु की बात सिद्ध होगयी, वे ईमान नहीं लायेंगे, चाहे उनके पास हर प्रकार की निशानी आ जाये। यहाँ तक कि वे दुःखदायी यातना देख लें।" (सूरः यूनूस-९६ तथा ९७)

[2]इसमें अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने वालों के एक और चरित्र तथा व्यवहार का वर्णन किया गया है कि मार्गदर्शन की कोई बात उनके समक्ष आये भी तो उसे नहीं मानते, परन्तु भटकने की कोई बात देखते हैं तो उसे तुरंत अपना लेते हैं। क़ुरआन करीम के इस वर्णन का दर्शन हर काल में किया जा सकता है। आज हम भी प्रत्येक स्थान एवं प्रत्येक समाज में यहाँ तक कि मुस्लिम समुदाय में भी यही कुछ देख रहे हैं कि पुण्य मुँह छिपाये फिर रहा है। तथा बुराई को हर व्यक्ति हाथ बढ़ा कर पकड़ रहा है।

[3]यह इस बात का कारण बताया जा रहा है कि लोग पुण्य के बदले पाप तथा सत्य की अपेक्षा असत्य का मार्ग क्यों अधिक अपनाते हैं ? यह कारण है अल्लाह की आयतों को झुठलाने, तथा उनसे असावधानी एवं अवहेलना का। यह प्रत्येक समाज में सामान्य रूप से व्याप्त है।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴۷﴾

(१४७) तथा यह लोग जिन्होंने हमारी आयतों एवं प्रलय के आने को झुठलाया, उन के सब कर्म अकारथ गये। उन्हें वही यातना दी जायेगी जो ये करते थे।[1]

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمْ يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۸﴾

(१४८) तथा मूसा के अनुयायियों ने उनके पश्चात अपने आभूषणों से एक बछड़ा बना कर देवता बना लिया जो एक ढाँचा था जिस में एक ध्वनि थी। क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उनसे बात नहीं करता था तथा न उनको कोई मार्ग बताता था, उसको उन्होंने (देवता) बना लिया तथा बड़े अन्याय का कार्य किया।[2]

---

[1]इसमें अल्लाह की आयतों को झुठलाने तथा आख़िरत को अस्वीकार करने वालों का परिणाम बताया गया है। चूँकि उनके कर्मों का आधार न्याय तथा सत्य नहीं, अपितु अत्याचार तथा असत्य है इसलिए उनके कर्म पत्र में पाप ही पाप होगा, जिसका अल्लाह तआला के यहाँ कोई मूल्य न होगा। हाँ, उनको इस पत्र का बदला वहाँ अवश्य दिया जायेगा।

[2]मूसा अलैहिस्सलाम जब चालीस रात्रियों के लिए तूर पर्वत पर गये, तो सामरी नामक व्यक्ति ने सोने के आभूषण एकत्र करके एक बछड़ा तैयार किया, जिसमें उसने जिब्रील के घोड़े के खुर की मिट्टी भी, जो उसने संभाल कर रखी हुई थी उसमें सम्मिलित कर दी, जिसमें अल्लाह तआला ने जीवन के प्रभाव रखा था, जिसके कारण बछड़ा कुछ-कुछ बैल की ध्वनि निकालता था (यद्यपि स्पष्ट वार्ता करने तथा मार्गदर्शन करने से विवश था, जैसा कि कुरआन के शब्दों से स्पष्ट होता है) इसमें मतभेद है कि वह माँस का बछड़ा बन गया, अथवा था वह सोने का ही परन्तु किसी प्रकार से उसमें वायु प्रवेश करती थी तो गाय बैल जैसी आवाज़ उसमें से निकलती। (इब्ने कसीर) इस ध्वनी के आधार पर सामरी ने इस्राईल की सन्तान को भटकाया कि तुम्हारा देवता तो यह है, मूसा भूल गये हैं तथा वह देवता की खोज में तूर पर्वत पर गये हैं। (यह घटना सूर: ताहा में आयेगी)

(१४९) तथा जब लज्जित हुए[1] एवं ज्ञात हुआ कि वास्तव में वे लोग भटकावे में पड़ गये, तो कहने लगे कि यदि हमारा पोषक हम पर कृपा न करे तथा हमारा पाप क्षमा न करे, तो हम बिल्कुल ही हानि पाने वालों में हो जायेंगे।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيٓ أَيۡدِيهِمۡ وَرَأَوۡاْ أَنَّهُمۡ قَدۡ ضَلُّواْ قَالُواْ لَئِن لَّمۡ يَرۡحَمۡنَا رَبُّنَا وَيَغۡفِرۡ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ ٱلۡخَٰسِرِينَ ﴿١٤٩﴾

(१५०) तथा जब मूसा अपने सम्प्रदाय की ओर वापस आये क्रोध तथा क्षोभ में डूबे हुए तो कहा कि तुमने मेरे पश्चात यह बड़ी बुरी जानशीनी की है। क्या अपने प्रभु के आदेश से पूर्व ही तुम ने शीघ्रता की, तथा शीघ्रता से पट्टिकायें एक ओर डाल दीं।[2] तथा अपने भाई हारून का सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। हारून ने कहा कि हे मेरी माँ से जन्मे![3] इन लोगों ने मुझे कमजोर समझा

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ غَضۡبَٰنَ أَسِفٗا قَالَ بِئۡسَمَا خَلَفۡتُمُونِي مِنۢ بَعۡدِيٓۖ أَعَجِلۡتُمۡ أَمۡرَ رَبِّكُمۡۖ وَأَلۡقَى ٱلۡأَلۡوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأۡسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُۥٓ إِلَيۡهِۚ قَالَ ٱبۡنَ أُمَّ إِنَّ ٱلۡقَوۡمَ ٱسۡتَضۡعَفُونِي وَكَادُواْ يَقۡتُلُونَنِي فَلَا

[1] سُقِطَ فِي أَيۡدِيهِمۡ यह एक वाक शैली है, जिसका अर्थ लज्जित होना है, यह लज्जा मूसा अलैहिस्सलाम की वापसी के पश्चात हुई जब उन्होंने आकर इस पर बुरा-भला कहा तथा डाँटा जैसा सूरः ताहा में आयेगा। यहाँ इसे इसलिए प्रथम लाया गया है कि उनकी कथनी-करनी एकत्रित हो जाये। (फ़तहुल क़दीर)

[2] जब आदरणीय मूसा ने आकर देखा कि वे बछड़े की पूजा में लगे हुए हैं, तो अत्यधिक क्रोधित हुए तथा शीघ्रता में पट्टिकायें, जो तूर पर्वत से लाये थे, इस प्रकार रखीं कि देखने वाले को प्रतीत हुआ कि उन्होंने नीचे फेंक दी हैं, जिसे क़ुरआन ने "डाल दीं" से तुलना की है फिर भी यदि फेंक दी हों, तो इसमें अनादर नहीं था क्योंकि उनका विचार पट्टिकाओं का अनादर करना नहीं था, अपितु धार्मिक मान-मर्यादा में लीन हो कर अप्रत्याशित रूप से उनसे यह कार्य हो गया।

[3] आदरणीय हारून तथा मूसा सगे भाई थे, परन्तु यहाँ आदरणीय हारून ने "माँ से जन्मे" इसलिए कहा कि इन शब्दों में प्रेम तथा कोमलता का पक्ष अधिक है।

تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَآءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ ۝

तथा निकट था कि मेरी हत्या कर दें ।[1] तो तुम मुझ पर शत्रुओं को न हंसवाओ ।[2] तथा मुझे इन अत्याचारियों की श्रेणी में न गिनो ।[3]

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِينَ ۝

(१५१) (मूसा ने) कहा ऐ मेरे पोषक ! मेरी त्रुटियों को क्षमा कर तथा मेरे भाई की भी तथा हम दोनों को अपनी कृपा परिधि में सम्मिलित कर ले तथा तू कृपा करने वालों में सर्वाधिक कृपालु है ।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَكَذٰلِكَ

(१५२) निःसन्देह जिन लोगों ने गौ की पूजा की है, उन पर अति शीघ्र उनके प्रभु की ओर से क्रोध तथा अपमान इस सांसारिक जीवन

---

[1]आदरणीय हारून ने अपना तर्क यह प्रस्तुत किया जिसके कारण वह अपने सम्प्रदाय को मिश्रणवाद (शिर्क) जैसे महापाप से रोकने में असफल रहे । एक अपनी क्षीणता तथा दूसरा इस्राईल की सन्तान का उपद्रव तथा सीमा उल्लंघन कि वे उनकी हत्या कर देने पर तैयार थे तथा उन्हें अपने जीवन रक्षा के लिए मौन रहना पड़ा, जिसकी आज्ञा अल्लाह ने ऐसे अवसरों पर प्रदान की है ।

[2]मेरी ही भर्त्सना से शत्रु प्रसन्न होंगे, जबकि यह अवसर तो शत्रुओं के सिर कुचलने का तथा उनसे अपने सम्प्रदाय को बचाने का है ।

[3]तथा वैसे भी विश्वास तथा कर्म के आधार पर मुझे उनकी श्रेणी में किस प्रकार सम्मिलित किया जा सकता है? मैंने न शिर्क किया न इसकी आज्ञा दी, न इस पर प्रसन्न हुआ, केवल मौन रहा तथा इसके लिए मेरे पास समुचित तर्क हैं, फिर मेरी गणना अत्याचारियों (बहुदेववादियों) के साथ किस प्रकार हो सकती है ? अतः आदरणीय मूसा ने अपने तथा अपने भाई हारून के लिए क्षमा तथा कृपा के लिए प्रार्थना की ।

نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ﴿١٥٢﴾

में ही पड़ेगा ।[1] तथा हम मिथ्यारोपियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं ।[2]

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٥٣﴾

(१५३) तथा जिन लोगों ने पाप के कार्य किये फिर वह उनके पश्चात उन से क्षमा माँग लें तथा ईमान ले आयें, तो तुम्हारा प्रभु उस क्षमा के पश्चात पाप क्षमा कर देने वाला कृपालु है ।[3]

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۚ وَفِىْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ﴿١٥٤﴾

(१५४) तथा जब मूसा का क्रोध शान्त हुआ तो उन पट्टिकाओं को उठा लिया। उनके लेखों में[4] उन लोगों के लिए, जो अपने प्रभु से डरते थे, मागदर्शन के निर्देश तथा कृपा थीं ।[5]

---

[1]अल्लाह का प्रकोप यह था कि क्षमा के लिये वध आवश्यक किया गया। तथा इससे पूर्व जब तक जीवित रहे अपमान तथा निन्दा के अधिकारी रहे।

[2]तथा यह दण्ड विशेष रूप से उन्हीं के लिए नहीं है, जो भी अल्लाह पर मिथ्यारोपण करता है, उसको हम यही दण्ड देते हैं।

[3]हाँ, जिन्होंने क्षमा माँग ली, उनके लिए अल्लाह तआला क्षमावान कृपालु है, ज्ञात हुआ कि क्षमा माँगने से हर पाप क्षमा हो जाता है, परन्तु यह क्षमा शुद्ध हृदय से माँगी जाये।

[4]نُسْخَةٌ (नुसख:) शब्द (फुअल:) के समतुल्य कारक के अर्थ में है। यह उस मूल को भी कहते हैं जिससे अनुकृत किया जाये तथा प्रतिलिपि को भी नुसख: कहते हैं। यहाँ नुस्ख: से तात्पर्य या तो वे मूल पट्टिकायें हैं, जिन पर तौरात लिखी गयी थी, अथवा इससे तात्पर्य वह दूसरा नुस्ख: हो जो पट्टिकायें जोर से फेंकने के कारण टूट जाने के पश्चात अनुकृत करके तैयार किया गया था। फिर भी उचित बात पहली ही लगती है। क्योंकि आगे चल कर आता है कि आदरणीय मूसा ने उन "पट्टिकाओ को उठा लिया।" जिस से ज्ञात होता है कि पट्टिकायें टूटी नहीं थीं, अतएव इसका मुख्य उद्देश्य "विषय" हैं, जो अनुवाद में लिया गया है।

[5]तौरात को भी, क़ुरआन की भाँति, उन्हीं लोगों के लिए मार्गदर्शन तथा कृपा कहा गया है जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि मुख्य लाभ आकाश शास्त्रों का उन्हीं लोगों को होता

وَاخْتَارَ مُوسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَاِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ﴿١٥٥﴾

(१५५) तथा मूसा ने सत्तर व्यक्ति अपने सम्प्रदाय में से हमारे निर्धारित समय के लिए घोषित किये, तो जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा ।[1] तो (मूसा) विनती करने लगे कि हे हमारे प्रभु ! यदि तुझ को यह स्वीकार होता तो इससे पूर्व ही इनको तथा मुझ को नाश कर देता, क्या तू हम में से कुछ मूर्खों के कारण सबको नाश कर देगा ? यह घटना केवल तेरी ओर से एक परीक्षा है। ऐसी परीक्षाओं से जिसे तू चाहे भटकावे में डाल दे तथा जिसको चाहे मार्ग दर्शन दे दे। तू ही हमारा संरक्षक है, अब हमें क्षमा कर तथा कृपा कर तथा तू क्षमा करने वालों में सर्वोत्तम क्षमावान है ।[2]

है । दूसरे लोग तो चूँकि अपने कानों को सत्य सुनने से, आँखों को सत्यता देखने से वन्द किये होते हैं, इसलिए वह कृपा स्रोत से सामान्य रूप से लाभ उठाने से वंचित ही रहते हैं ।

[1]इन सत्तर व्यक्तियों का विस्तृत विवरण अगली टिप्पणी में आ रहा है। यहाँ यह वतलाया जा रहा है कि आदरणीय मूसा ने अपने सम्प्रदाय में से सत्तर व्यक्तियों का चयन किया, तथा उन्हें तूर पर्वत पर ले गये, जहाँ यातना के रूप में उन्हें मार दिया गया, जिस पर आदरणीय मूसा ने कहा ....

[2]इस्राईल की सन्तान में ये सत्तर व्यक्ति कौन थे? इसमें व्याख्याकारों का मतभेद है एक मत यह है कि जब आदरणीय मूसा ने तौरात के आदेश उन्हें सुनाया तो उन्होंने कहा कि हम कैसे विश्वास कर लें कि यह किताब वास्तव में अल्लाह की ओर से उतारी गयी है ? हम तो जब तक स्वयं अल्लाह तआला को वार्तालाप करते न सुन लें, इसे नहीं मानेंगे। अतः उन्होंने सत्तर महात्माओं का चयन किया तथा उन्हें तूर पर्वत पर ले गये। वहाँ अल्लाह तआला ने आदरणीय मूसा से वार्ता की, जिसे उन लोगों ने सुना। परन्तु वहाँ उन लोगों ने एक नई माँग रख दी कि हम जब तक अल्लाह तआला को अपनी आँख से न देख लेंगे ईमान नहीं लायेंगे। दूसरा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वह हैं, जो पूरे समुदाय की ओर से बछड़े की पूजा के महापाप से क्षमा-याचना के लिए तूर पर्वत पर

(१५६) तथा हम लोगों के नाम दुनिया में भी भलाई (पुण्य) लिख दे तथा परलोक में भी। हम तेरी ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं।[1] अल्लाह (तआला) कहता है कि मैं अपना प्रकोप उसी पर घटित करता हूँ, जिस पर चाहता हूँ। तथा मेरी कृपा की परिधि में प्रत्येक वस्तु है।[2] तो वह कृपा उन लोगों के नाम अवश्य लिखूँगा, जो अल्लाह से डरते हैं तथा ज़कात (धर्मदान)

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ ۚ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۖ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

ले जाये गये थे तथा वहाँ जाकर उन्होंने अल्लाह तआला को देखने की इच्छा व्यक्त की। तीसरा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वे हैं, जिन्होंने इस्राईल की सन्तान को बछड़े की पूजा करते देखा, परन्तु उन्होंने इससे मना नहीं किया। चौथा मत यह है कि ये सत्तर व्यक्ति वे हैं, जिन्हें अल्लाह तआला के आदेश पर तूर पर्वत पर ले जाने के लिए चुना गया था। वहाँ जाकर उन्होंने अल्लाह से प्रार्थनायें कीं। जिनमें एक प्रार्थना यह भी थी कि "हे अल्लाह ! हमें तू वह कुछ प्रदान कर, जो इससे पूर्व किसी को प्रदान नहीं किया तथा न भविष्य में किसी को प्रदान करेगा।" अल्लाह तआला को यह प्रार्थना प्रिय नहीं लगी, जिसके कारण भूकम्प आया तथा वे लोग उसमें मर गये। अधिकतर व्याख्याकार दूसरे मत के पक्ष में हैं तथा उसे उन्होंने वही घटना बताया है जो सूर: अल-बक़र: की आयत संख्या-५६ में आयी है, जहाँ उन पर बिजली की कड़क से मृत्यु होने का कारण वर्णित किया गया है। तथा यहाँ भूकम्प से मृत्यु का वर्णन है। इसके समर्थन में यह कहा गया है कि सम्भव है कि दोनों ही प्रकोप हुए हों अर्थात ऊपर से बिजली की कड़क तथा नीचे से भूकम्प। अतएव आदरणीय मूसा की उस विनय निवेदन के पश्चात कि यदि उनको मरना ही था तो उससे पूर्व उस समय मारता जब ये बछड़े की पूजा करते थे, अल्लाह तआला ने उन्हें पुन: जीवित कर दिया।

[1]अर्थात क्षमा माँगते हैं।

[2]यह उसकी अपार कृपा ही तो है कि जिसके कारण अच्छे-बुरे, ईमानवाले तथा काफ़िर दोनों ही उसकी कृपा से लाभान्वित हो रहे हैं। हदीस में आता है, "अल्लाह तआला की दया के सौ भाग हैं यह उसकी दया का ही भाग है कि जिससे सृष्टि एक-दूसरे पर दया करती है तथा नरभक्षी पशु अपने बच्चों पर दया-प्रेम करते हैं तथा उसने अपनी दया के निन्नावे भाग अपने पास रखे हैं।" (सहीह मुस्लिम संख्या २१०८ तथा इब्ने माज: संख्या ४२९३)

देते हैं तथा जो हमारी आयतों के प्रति ईमान रखते हैं।

(१५७) जो लोग ऐसे अभिज्ञ ईश्दूत (सांसारिक गुरुओं द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) नबी का अनुकरण करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात तथा इंजील में लिखा हुआ पाते हैं।[1] वह उनको पुण्य के कार्यों का आदेश करते हैं तथा पाप के कार्यों से रोकते हैं।[2] तथा पवित्र पदार्थों को वैध (प्रयोग करने योग्य) बताते हैं तथा अपवित्र (अशुद्ध) पदार्थों को निषेध (प्रयोग करने से रोकना) बताते हैं तथ उन लोगों पर जो भार एवं गले के फंदे थे [3] उन को दूर करते हैं। इसलिए जो लोग

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ ز يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ط فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا

[1]यह आयत भी इस बात को स्पष्ट करने के लिए परम आवश्यक विशेषता रखती है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान लाये बिना पारलौकिक मोक्ष सम्भव नहीं तथा उचित एवं स्वीकार्य ईमान वही है जिसका विस्तृत वर्णन मोहम्मदु र्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया है। इस आयत से भी "सर्व धर्म संभाव" की जड़ कटती है।

[2]भला वह है जिसे धर्म विधान ने भला कहा तथा बुरा वह है जिसे धर्म विधान ने अनुचित किया है।

[3]ये भार तथा फंदे वे हैं जो पिछले धर्मों के नियमों में थे कि जैसे प्राण के बदले प्राण अनिवार्य था दियत (खून का मूल्य जो मृतकों के उत्तराधिकारियों द्वारा माँगा जाये जो देने भी हों अथवा क्षमा नहीं था) अथवा जिस वस्त्र को अपवित्र चीज़ लग जाती, उसका त्याग करना आवश्यक था, इस्लामी धार्मिक नियम ने इसे केवल धोने का उपदेश दिया। जिस प्रकार हत्या के बदले में रक्त का मूल्य माँगने तथा क्षमा करने की अनुमति प्रदान की है आदि। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि, "मुझे सरल एकेश्वरवादी धर्म के साथ भेजा गया है।" (मुसनद अहमद भाग ५, पृ॰ २६६, भाग ६, पृ॰ ११६ तथा २३३) परन्तु दुर्भाग्य से इस समुदाय ने अपनी ओर से रीति-रीवाज का बोझ अपने ऊपर लाद लिया है तथा अज्ञानता का फंदा अपने गले का आभूषण बना लिया है, जिससे विवाह तथा शोक दोनों यातना बन गये हैं।

النُّوْرَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿١٥٧﴾

इस नबी पर ईमान लाते हैं तथा उनका समर्थन करते हैं एवं उनकी सहायता करते हैं तथा उस प्रकाश का अनुकरण करते हैं, जो उनके साथ भेजा गया है। ऐसे लोग पूर्ण सफलता प्राप्त करने वाले हैं।[1]

قُلْ یٰٓاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعَاۨ الَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ۠ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ

(१५८) (आप) कह दीजिए कि हे लोगो ! मैं तुम सभी की ओर उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका राज्य सभी आकाशों तथा धरती में है, उसके अतिरिक्त कोई भी इबादत के योग्य नहीं, वही जीवन प्रदान करता है तथा वही मृत्यु प्रदान करता है। इसलिए अल्लाह के प्रति तथा उसके अभिज्ञ दूत के प्रति

---

[1]इन अन्तिम शब्दों से भी यही स्पष्ट होता है कि सफल वही लोग हैं जो परम आदरणीय मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने वाले तथा अनुकरण करने वाले होंगे। जो मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान नहीं लायेंगे वे सफल नहीं, हानि उठाने वाले तथा असफल होंगे। इसके अतिरिक्त सफलता से भी परलोक की सफलता का तात्पर्य है। यह सम्भव है कि कोई समुदाय जो मोहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान न रखता हो तथा उसे सांसारिक वैभव तथा आनन्द की बाहुल्यता प्राप्त हो। जिस प्रकार इस समय पाश्चात्य देश तथा यूरोपीय एवं अन्य समुदायों की दशा है कि वे ईसाई, यहूदी, नास्तिक अथवा मूर्तिपूजक होने के उपरान्त भी भौतिक उन्नति एवं वैभव में श्रेष्ठ हैं। परन्तु उन की यह उन्नति अस्थाई तथा परीक्षा के लिए है। यह उनकी आख़ीरत की सफलता का प्रमाण नहीं है। इसी प्रकार واتّبعوا النور الذي أنزل معه से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सूर: अल-मायदा की आयत संख्या-१५ में प्रकाश का तात्पर्य क़ुरआन मजीद ही है। (जैसाकि वहाँ भी स्पष्ट किया गया था) क्यों कि जो प्रकाश आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के साथ उतारा गया, वह क़ुरआन मजीद ही है। इसलिए इस प्रकाश से स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तात्पर्य नहीं है। परन्तु यह अलग बात है कि आप की विशेषताओं में से एक विशेषता प्रकाश भी है। जिससे नास्तिकता, कुफ्र एवं बहुदेववाद के अंधेरे दूर हुए। परन्तु आपकी प्रकाशमयी विशेषता होने के कारण आपका نورٌ مِن نور الله होना सिद्ध नहीं हो सकता। जिस प्रकार से धर्म में आधुनिकीकरण करने वाले यह सिद्ध करते हैं।

الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَٰتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

विश्वास करो । जो कि अल्लाह पर तथा उसके आदेश पर ईमान रखते हैं तथा उनका अनुसरण करो ताकि तुम सत्य मार्ग पर आ जाओ ।[1]

وَمِن قَوْمِ مُوسَىٰ أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٩﴾

(१५९) तथा मूसा के समुदाय में एक वर्ग ऐसा भी है जो सत्य के अनुरूप ही निर्देश करता है तथा उसके अनुरूप न्याय करता है ।[2]

وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ

(१६०) तथा हम ने उनको बारह परिवारों में बाँट कर सब का अलग-अलग समुदाय

---

[1]यह आयत भी मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दूतत्व के विश्वव्यापी होने का खुला प्रमाण है। इसमें अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह आदेश दिया है कि कह दीजिए कि हे अखिल जगत के मनुष्यों ! मैं सभी की ओर अल्लाह का दूत बना कर भेजा गया हूँ । इस प्रकार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम समस्त मानव जाति के मोक्ष दाता तथा ईशदूत हैं । अब न मोक्ष तथा मार्गदर्शन ईसाइयत में है और न यहूदियत में एवं न किसी अन्य धर्म में केवल इस्लाम में है । इस आयत में तथा इससे पूर्व आयत में आपको अनभिज्ञ नबी कहा गया है । यह आपकी प्रमुख विशेषता है । उम्मी (أُمِّي) का अर्थ है अशिक्षित अथवा अनपढ़ । अर्थात आपने किसी गुरु से अथवा शिक्षक से किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त नहीं की । परन्तु इसके उपरान्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो क़ुरआन करीम प्रस्तुत किया उसकी विशेषता तथा भाषा के समक्ष संसार भर के भाषणकर्ता तथा भाषा विशेषज्ञों ने घुटने टेक दिये तथा आपने जो शिक्षायें प्रस्तुत कीं उनकी यर्थाता तथा वास्तविकता को समस्त संसार स्वीकार करता है, जो इस बात का प्रमाण है कि आप वास्तव में अल्लाह के सच्चे दूत हैं, वरन् एक अनपढ़ न ऐसा क़ुरआन प्रस्तुत कर सकता है तथा न ऐसी शिक्षायें वर्णन कर सकता है, जो न्याय का श्रेष्ठ नमूना है तथा मानवता की सफलता एवं उन्नति के लिए अनिवार्य है । उन्हें अपनाये बिना संसार वास्तविक सुख शांति एवं कुशलता से आलिंगित नहीं हो सकता ।

[2]इससे तात्पर्य वही कुछ लोग हैं जो मुसलमान हो गये थे । अब्दुल्लाह बिन सलाम, आदि رضي الله عنهم

إِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهٗٓ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٠﴾

निर्धारित कर दिया ।[1] तथा हमने मूसा को आदेश दिया जबकि उनके समुदाय ने उनसे पानी मांगा कि अपनी छड़ी को अमुक पत्थर पर मारो, फिर तुरन्त उसमें से बारह स्रोत बह निकले । प्रत्येक व्यक्ति ने अपने पानी पीने का स्थान जान लिया। तथा हमने उन पर बादलों की छाया की, तथा उनको तुरंजबीन तथा बटेरें पहुँचायीं कि खाओ पवित्र स्वादिष्ट वस्तुयें जो कि हमने तुम को प्रदान की हैं। तथा उन्होंने हमारा कोई हानि नहीं किया परन्तु अपनी ही हानि करते थे ।

وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾

(१६१) तथा जब उनको आदेश दिया गया कि तुम लोग उस बस्ती में जाकर रहो तथा खाओ उससे जिस स्थान पर तुम रूचि रखो तथा मुख से यह कहते जाना कि क्षमा माँगते हैं तथा झुक-झुक कर द्वार से प्रवेश करना। हम तुम्हारी त्रुटियाँ क्षमा कर देंगे। जो सदाचार करेंगे उनको इससे अधिक प्रदान करेंगे ।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا

(१६२) तो बदल डाला उन अत्याचारियों ने एक कथन को जो विरुद्ध था उस कथन के जिसका उन्हें आदेश दिया गया था। इस पर हम

---

[1] أسباط बहुवचन है سِبْط का तथा इसका अर्थ पौत्र है। यहाँ अस्बात वंशों के लिए प्रयोग किया गया है। अर्थात आदरणीय याक़ूब के बारह पुत्रों से बारह वंश धरती पर बने। प्रत्येक वंश पर अल्लाह तआला ने एक-एक निरीक्षक भी नियुक्त किया था तथा कह दिया था ﴿وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا﴾ (सूर: अल-मायद:-१२) यहाँ अल्लाह तआला उन बारह समुदायों के कुछ-कुछ विशेषताओं में परस्पर विभेद होने के कारण उनके अलग-अलग समुदाय होने की चर्चा उपकार जताने हेतु कर रहा है।

عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾

ने आकाश से एक आपदा भेजी इस कारण कि वे अत्याचार किया करते थे।[1]

وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ إِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَأْتِيْهِمْ ۚ كَذٰلِكَ ۚ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾

(१६३) तथा आप उन लोगों से[2] उस नागरिकों[3] का जो समुद्र के निकट बसे थे उस समय की दशा पूछिये जब कि वह शनिवार के दिन के विषय में सीमा लांघ रहे थे, जब कि उनके शनिवार के दिन उनको मछलियाँ प्रत्यक्ष हो-हो कर उनके समक्ष आतीं थीं। तथा जब शनिवार का दिन न होता, तो उनके समक्ष न आती थीं। हम उनकी इस प्रकार परीक्षा ले रहे थे। इस कारण से कि वे आदेशों की अवहेलना करते थे।[4]

---

[1]आयत संख्या १६० से १६२ तक जो बातें वर्णित की गयी हैं यह वे हैं जो प्रथम भाग के सूर: अल बक़र: के प्रारम्भ में वर्णित की गयी हैं। वहाँ उन की विस्तृत व्याख्या देख ली जाये।

[2] وَسْـَٔلْهُم में هُم सर्वनाम है, जिसका संकेत यहूदियों की ओर है अर्थात 'उनसे पूछिये' इससे यहूदियों को यह बताने का भी उद्देश्य है कि इसका ज्ञान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी है, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सत्यता का प्रमाण है क्योंकि अल्लाह की ओर से प्रकाशना (वह्यी) के बिना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस घटना का ज्ञान होना असम्भव है।

[3]उस बस्ती के निर्धारण में मतभेद है, कोई उसका नाम ईला, कोई तबरीया, कोई ईलिया तथा कोई सीरिया की कोई बस्ती जो समुद्र के निकट थी, बतलाता है। व्याख्याकारों का अधिकतर झुकाव ईला की ओर है जो मदयन तथा तूर पर्वत के मध्य कुलज़ुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

[4]"حيتان" शब्द حوت शब्द का बहुवचन है। जिसका अर्थ है मछली। شرّعاً शब्द شارع शब्द का बहुवचन है। अर्थ है जल तल पर उभर-उभर कर आने वालियाँ। यह यहूदियों की उस घटना की ओर संकेत है, जिसमें उन्हें शनिवार के दिन मछली के शिकार से रोक दिया गया था। परन्तु परीक्षा के रूप में शनिवार के दिन मछलियाँ जल-तल पर उभर-उभर कर उन्हें शिकार करने के लिए आमन्त्रित करतीं। तथा जब यह दिन समाप्त हो

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا ۙ اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٦٤﴾

(१६४) तथा जबकि उनमें से एक गुट ने यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश देते हो ? जिनको अल्लाह पूर्ण रूप से विनाश करने वाला है। अथवा उनको कठोर दण्ड देने वाला है ।[1] उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे पोषक के समक्ष याचना करने के लिए तथा इसलिए कि संभवत: ये डर जायें।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا

(१६५) तो जब वह उसको भूल गये जिस का स्मरण उनको दिलाया जाता रहा ।[2] तो हमने

जाता तो उस प्रकार न आतीं। अन्ततः यहूदियों ने एक बहाना निकाल कर अल्लाह के आदेश की अवहेलना की कि गड्ढे खोद लिए ताकि मछलियाँ उसमें फंसी रहें तथा जब शनिवार का दिन समाप्त हो जाता, तो उनको पकड़ लेते।

[1]इस गुट से तात्पर्य सत्कर्मियों का वह गुट है, जो ऐसे बहाने नहीं बनाता था तथा अन्य लोगों को समझा-समझा कर उनके सुधार से निराश भी हो गया था। इस प्रकार उनमें कुछ लोग ऐसे भी समझाने वाले थे जो उन्हें शिक्षा देते तथा इस कार्य से रोकते थे। सत्कर्मियों का यह गुट उन्हें यह कहता कि ऐसे लोगों को समझाने-बुझाने से क्या लाभ जिनके भाग्य में विनाश तथा अल्लाह की यातना है। अथवा इस गुट से तात्पर्य वही उल्लघंनकारी तथा अवज्ञाकारी लोग हैं, जब उन्हें समझाने वाले लोग शिक्षा देते तो कहते कि जब तुम्हारे विचार से विनाश तथा अल्लाह की यातना हमारा भाग्य है, तो फिर हमें क्यों शिक्षा-दीक्षा देते हो ? तो वे उत्तर देते कि एक तो अपने प्रभु के समक्ष क्षमा प्रस्तुत करने के लिए ताकि हम तो अल्लाह की पकड़ से सुरक्षित रहें क्योंकि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना होते देखना तथा उससे लोगों को न रोकना भी अपराध है, जिसके कारण अल्लाह तआला पकड़ सकता है। दूसरा लाभ यह है कि शायद यह लोग अल्लाह के आदेशों की अवहेलना करने से रुक जायें। पहली व्याख्या से तीन गुट हुए १. अवज्ञाकारी तथा शिकार करनेवाला गुट २. वह गुट जिसने बिल्कुल एकान्त धारण कर लिया था, न वह अवज्ञाकारियो में से था न रोकने वालों में से ३. वह गुट जो अवज्ञाकारी न था तथा बिल्कुल एकान्त धारण भी नहीं किया था। अपितु अवज्ञाकारियों को रोकता भी था। दूसरी व्याख्या के आधार पर दो गुट हुए एक अवज्ञाकारियों का गुट दूसरा रोकने वालों का गुट।

[2]अर्थात शिक्षा-दीक्षा की उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की तथा अवज्ञाकरिता पर अड़े रहे।

الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوٓءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ

उन लोगों को तो बचा लिया जो उन को बुरी बातों से रोकते थे तथा उन लोगों को जो अत्याचार करते थे एक कड़ी यातना में पकड़ लिया । इस कारण कि वे आज्ञा का उल्लघंन करते थे ।[1]

فَلَمَّا عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ

(१६६) अर्थात जब वह जिस काम से मना किया गया था उसमें सीमा को पार कर गये, तो हमने उनको कह दिया कि तुम अपमानित बन्दर बन जाओ ।[2]

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَن يَسُومُهُمْ سُوٓءَ الْعَذَابِ ۗ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ

(१६७) तथा वह समय याद रखना चाहिए कि आपके पालक ने बता दिया कि वह इन (यहूदियों) पर प्रलय तक ऐसे व्यक्ति को अधिकृत रखेगा जो इन लोगों को कठोर दण्ड द्वारा दुख पहुँचाता रहेगा ।[3] निःसंदेह आपका

---

[1]अर्थात वे अत्याचारी भी थे, अल्लाह तआला के आदेशों की अवहेलना करके उन्होंने अपने प्राणों पर अत्याचार किया तथा उन्हें नरक का ईंधन बना लिया तथा उपद्रवी भी कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना को अपना आचरण तथा कर्म बना लिया ।

[2]عَتَوا का अर्थ है जो ईश्वरीय आदेशों के उल्लंघन में सीमा पार कर गये । व्याख्याकारों में इस बात पर मतभेद है कि मोक्ष प्राप्त करने वाले केवल वही व्यक्ति थे, जो मना करते थे तथा शेष दोनों अल्लाह की यातना के भोगी हुए ? अथवा पकड़ में आने वाले केवल अवहेलना करने वाले थे ? तथा शेष दो गुट मोक्ष प्राप्त करने वाले थे । इमाम इब्ने कसीर ने दूसरे मत को प्रमुखता दी है ।

[3]تأذّن-إيذان शब्द का अर्थ إعلام शब्द के समतुल्य है, जिसका अर्थ घोषणा है (सूचित कर देना, जता देना) अर्थात वह समय भी स्मरण करो जब आप के पोषक ने इन यहूदियों को भली-भाँति सूचित कर दिया था । لَيَبْعَثَنّ शब्द में अरबी का अक्षर "लाम" बल देने के लिये है जो सौगन्ध के अर्थ का लाभ देता है । अर्थात सौगन्ध खाकर अत्यधिक प्रभावित ढ़ंग से अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि वह इन लोगों पर प्रलय तक ऐसे लोगों को प्रभावित रखेगा, जो इनको कठोर यातनाओं में ग्रसित रखेंगे । अत: यहूदियों का इतिहास इसी अपमान निन्दा तथा दासता एवं अधीनता का इतिहास है जिसकी सूचना अल्लाह तआला ने इस आयत में दी है । इस्राईल की वर्तमान सरकार क़ुरआन की

لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾

पोषक अतिशीघ्र दण्ड देता है तथा नि:संदेह वह वास्तव में अत्यधिक क्षमाशील तथा कृपालु है ।[1]

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِى الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾

(१६८) तथा हमने संसार में उनके (विभिन्न) गुट कर दिये । कुछ उनमें पुनीत थे तथा कुछ अन्य आचरण के थे एवं हम उनको सम्पन्नता तथा दरिद्रता के द्वारा उनकी परीक्षा लेते रहे कि संभवत: वे लौट जायें ।[2]

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ

(१६९) फिर उनके पश्चात ऐसे लोग उनके कपूत हुए ।[3] कि धर्मशास्त्र को उनसे प्राप्त किया । वह इस तुच्छ संसार का थोड़ा-सा भी धन ले लेते हैं ।[4] तथा कहते हैं कि हमें अवश्य मोक्ष प्राप्त हो जायेगी ।[5] यद्यपि उनके

वर्णित यथार्थता के विपरीत नहीं है इस लिये की क़ुरआन के वर्णित अनिवंधन وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ की द्योतक है जो क़ुरआनी यथार्थता के विपरीत नहीं अपितु उस की समर्थक है । (विस्तार के लिए देखिए सूर: अले इमरान -११२ की व्यख्या)

[1]अर्थात यदि उनमें से कोई क्षमा माँग कर मुसलमान हो जायेगा, तो वह इस अपमान तथा घोर यातना से बच जायेगा ।

[2]इसमें यहूदियों के विभिन्न गुटों में विभाजित हो जाने एवं उनमें कुछ के पुनीत होने की चर्चा है । तथा उनकी दोनों प्रकार से परीक्षा लेने का वर्णन है कि संभवत: वह अपनी करतूतों से रुक जायें तथा अल्लाह की ओर पलट आयें ।

[3]خَلَف (लाम पर ज़बर के साथ) सपूत को خَلْف (लाम के लिप्त होने पर) कुपूत के अर्थों में प्रयोग होता है ।

[4]أدنى, دُنُوٌّ (निकट) से लिया गया है अर्थात निकट का धन उगाहते हैं, जिसका तात्पर्य दुनिया है अथवा यह دَنَاءَةٌ से लिया गया है,जिससे अभिप्राय तुच्छ, हीन तथा गिरा पड़ा धन है । दोनों का उद्देश्य उनकी माया मोह को दर्शाता है ।

[5]अर्थात माया मोह के उपरान्त भी मोक्ष की कामना करते हैं । जैसे आजकल के मुसलमानों की दशा है ।

مِّثْلُهُۥ يَأْخُذُوهُ ۚ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِم مِّيثَٰقُ ٱلْكِتَٰبِ أَن لَّا يَقُولُوا۟ عَلَى ٱللَّهِ إِلَّا ٱلْحَقَّ وَدَرَسُوا۟ مَا فِيهِ ۗ وَٱلدَّارُ ٱلْءَاخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

पास वैसा ही धन-द्रव्य आने लगे तो उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे इस शास्त्र के इस विषय का वचन नहीं लिया गया ? कि अल्लाह की ओर सत्य कथन के अतिरिक्त अन्य कथन को सम्बन्धित न करें ?[1] तथा उन्होंने इस शास्त्र में जो कुछ था उसको पढ़ लिया।[2] तथा परलोक गृह उन लोगों के लिए उत्तम है जो अल्लाह का भय रखते हैं, फिर क्या तुम नहीं समझते।

وَٱلَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِٱلْكِتَٰبِ وَأَقَامُوا۟ ٱلصَّلَوٰةَ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

(१७०) तथा जो लोग धर्मशास्त्र पर अडिग हैं तथा नमाज़ की स्थापना करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो स्वयं का सुधार कर लें प्रत्युपकार व्यर्थ न करेंगें।[3]

---

[1]इसके उपरान्त भी यह झूठी बातें अल्लाह तआला से सम्बन्धित करने से नहीं चुकते। उदाहरणार्थ उपरोक्त मोक्ष की बात।

[2]इसका एक दूसरा भावार्थ मिटाना भी हो सकता है जैसे دَرَست الرِّيح الآثار (वायु ने चिन्ह मिटा डाले) अर्थात धर्मशास्त्र की बातों को मिटा डाला अर्थात तदानुसार कर्म नहीं किया।

[3]इन लोगों में से जो अल्लाह के मार्ग को अपना लें, शास्त्र को सुदृढ़ता से थाम लें, जिससे तात्पर्य मूल तौरात है तथा जिस के अनुसार कर्म करते हुए मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि) वसल्लम के दूतत्व पर विश्वास रखें, नमाज़ आदि को दृढ़ता से पढ़ते रहें, तो अल्लाह तआला ऐसे सुधार करने वालों के पुण्य को अकारथ न करेगा। इसमें उन शास्त्रधारियों (सम्बोधित विषय का सम्बन्ध विशेष रूप से यहूदियों से है) का वर्णन है, जो अल्लाह के भय, किताब पर दृढ़ता से पालन करना, तथा नमाज़ को निश्चित समय पर निरन्तर पढ़ना। अत: उनके लिए परलोक की शुभसूचना है। इसका अर्थ यह हैं कि वे मुसलमान हो जायें तथा मोहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत पर ईमान ले आयें। क्योंकि अखिल जगत के लिए अब अन्तिम ईशदूत परम आदरणीय मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाये बिना मोक्ष सम्भव नहीं।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

(१७१) तथा वह समय भी स्मरणीय है, जब हम ने पर्वत को छत्री के समान उनके ऊपर लटका दिया और उनको विश्वास हो गया कि अब उन पर गिरा तथा कहा कि हम ने जो शास्त्र तुम को दिया है उसे सुदृढ़ता से स्वीकार करो तथा याद रखो जो आदेश इसमें हैं, उससे सम्भावना है कि तुम अल्लाह से डरने लगो ।[1]

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَن تَقُولُوا

(१७२) तथा जब आप के पोषक ने आदम की सन्तान की पीठों से उनकी सन्तान को निकाला तथा उनसे उन ही के सम्बन्ध में वचन लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने उत्तर दिया, क्यों नहीं, हम सभी साक्षी हैं,[2]

---

[1]यह उस समय की घटना है जब आदरणीय मूसा उनके पास तौरात लाये तथा उसके आदेश उनको सुनाये । तो उन्हों ने अपने व्यवहार के अनुसार उन के अनुसार कार्य करना अस्वीकार किया तथा अवहेलना की। जिसके कारण अल्लाह तआला ने उनके सिर पर पर्वत ला खड़ा किया कि तुम पर गिरा कर कुचल दिया जायेगा, जिससे डर कर उन्होंने वचन दिया कि तौरात के अनुसार कार्य करेंगे। कुछ कहते हैं कि यह घटना रफ़आ पर्वत की है जो उनकी माँग के कारण घटित हुई। जब उन्होंने कहा कि हम तौरात के नियमों के अनुसार कार्य तब करेंगे जब हमारे सिरों पर पर्वत उठा कर दिखायी दे। परन्तु पहली बात अधिक उचित लगती है। والله أعلم, यहाँ मात्र पर्वत का वर्णन है । परन्तु इससे पूर्व सूर: अल-बक़र: आयत संख्या ६३ तथा आयत संख्या ९३ में, दो स्थानों पर इस घटना का वर्णन आया है। वहाँ इसका नाम स्पष्ट रूप से तूर पर्वत बताया गया है।

[2]यह عَهْدِ أَلَسْتُ वचन कहलाता है जो أَلَسْتُ بِرَبِّكُم से बनाया गया योग है। यह वचन आदरणीय आदम की सृष्टि के उपरान्त उनके पीछे होने वाली संतान से लिया गया था । इसका विस्तृत विवरण एक सहीह हदीस में इस प्रकार आताा है कि, "अरफ़ा वाले दिन 'नोमान' नामी स्थान पर अल्लाह तआला ने आदम की सन्तानों से वचन लिया। इस प्रकार कि आदम की पीठ से उनकी पैदा होने वाली सन्तानों को निकाला गया तथा उनको अपने समक्ष फैला दिया तथा उनसे पूछा कि क्या मैं तुम्हारा प्रभु नहीं हूँ ?

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾

ताकि तुम लोग प्रलय के दिन यह न कहो कि हम तो इससे मात्र अनजान थे।

أَوْ تَقُوْلُوْٓا إِنَّمَآ أَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾

(१७३) अथवा यह कहो कि सर्व प्रथम मिश्रण (शिर्क) तो हमारे पूर्वजों ने किया तथा हम उन के पश्चात उनके वंश में हुए, तो क्या उन कुकर्मियों के कुकर्मो पर तू हमें विनाश में झोंक देगा।[1]

सभी ने उत्तर दिया بَلٰى، شَهِدْنَا (क्यों नहीं, हम सब साक्षी हैं)। (मुसनद अहमद भाग १, पृष्ठ २७२, तथा अल-हाकिम भाग २, पृष्ठ संख्या ५४४ एवं इसको सहीह कहा है और इमाम ज़हबी उनसे सहमत हैं) इमाम शौकानी इस हदीस के विषय में लिखते हैं "इसके प्रमाण में कोई कमी नहीं हैं" (फ़तहुल क़दीर) इसके अतिरिक्त इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि "यह 'सृष्टि लोक' कहलाता है इसकी यही व्याख्या ठीक तथा उचित एवं सत्य है, जिससे हटकर किसी अन्य भाव की ओर जाना उचित नहीं क्योंकि यह प्रमाणित हदीस है तथा इसके सम्बन्ध सहाबा से सिद्ध हैं तथा इसे किसी अन्य भावार्थ में लेना उचित नहीं है।" अत: अल्लाह के रब्ब होने की गवाही प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति में समावेशित है। इस विषय को रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार वर्णन किया है, कि "प्रत्येक शिशु प्रकृति पर जन्म लेता है, परन्तु उसके माता-पिता उसे यहूदी, ईसाई अथवा अग्निपूजक बना देते हैं। जिस प्रकार जानवर का बच्चा पूर्ण रूप से पैदा होता है, उस का नाक कान कटा नहीं होता।" (सहीह बुख़ारी किताबुल जनायेज़ तथा सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र) तथा सहीह मुस्लिम का शब्द है। अल्लाह तआला फ़रमाता है, "मैंने अपने भक्तों को हनीफ़ (अल्लाह की ओर एकाग्रता से लीन होने वाला) पैदा किया है परन्तु शैतान उनको इनके प्राकृतिक धर्म से विचलित कर देता है।" अल-हदीस (सहीह मुस्लिम किताबुल जन्न:) यह प्रकृति अथवा प्राकृतिक धर्म ही एकेश्वरवाद (तौहीद) है तथा उसके द्वारा उतारा धर्म विधान है जो अब इस्लाम के रूप में सुरक्षित तथा विद्यमान है।

[1]अर्थात हमने तुमसे यह वचन तथा अपने स्वामित्व की गवाही इसलिए ली थी ताकि तुम यह तर्क प्रस्तुत न कर सको कि हम तो अनजान थे अथवा हमारे पूर्वज बहुदेव उपासना (शिर्क) करते चले आये थे। यह तर्क प्रलय के दिन अल्लाह के न्यायालय में मान्य नहीं होगा।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾

(१७४) तथा हम इसी प्रकार आयतों को स्वच्छता पूर्वक वर्णन कर देते हैं ताकि वे वापस आ जायें।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾

(१७५) तथा उन लोगों को उस व्यक्ति की दशा पढ़ कर सुनाईये कि जिसको हमने अपनी निशानियाँ प्रदान कीं, फिर वह उनसे बिल्कुल निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग गया, इस प्रकार वह भटके हुए लोगों में सम्मिलित हो गया।[1]

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۗ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ

(१७६) तथा यदि हम चाहते तो उसको इन निशानियों के कारण उच्च पद पर आसीन कर देते, परन्तु वह तो संसार के माया मोह में पड़ गया एवं अपनी इच्छाओं के अनुसरण करने लगा तो उसकी दशा कुत्ते के समान हो गयी कि यदि तुम उस पर आक्रमण करो तब भी हाँफे अथवा उस को छोड़ दो तब भी हाँफे।[2] यही दशा उन लोगों की है जिन्होंने

---

[1]व्याख्याकारों ने इसे एक निश्चित व्यक्ति से सम्बन्धित माना है जिसे ईश्वरीय ग्रन्थ का ज्ञान प्राप्त था परन्तु वह संसार एवं शैतान का अनुयायी बन कर पथभ्रष्ट हो गया। किन्तु उसके निर्धारण के संदर्भ में कोई प्रमाण नहीं अत: उसके निर्धारण की कोई आवश्यकता भी नहीं है।

[2] لَهَثٌ थकान अथवा पियास के कारण जीभ निकालने को कहते हैं। कुत्ते का यही स्वभाव होता है कि उसे डांटो-डपटो अथवा उसकी दशा पर छोड़ दो दोनों परिस्थितियों में यह भौंकने से नहीं रुकता, इसी प्रकार इसका यह भी स्वभाव है कि वह पेट भर खाये हो अथवा भूखा, स्वस्थ हो अथवा रोगी, थका हुआ हो अथवा चुस्त, प्रत्येक अवस्था में जीभ निकाले हाँफता रहता है। यही दशा ऐसे व्यक्ति की है उसे शिक्षा-दीक्षा दो अथवा न दो, उसकी दशा एक ही रहेगी तथा संसारिक धन-दौलत के लिए लार टपकती रहेगी।

فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾

हमारी निशानियों को झुठलाया। अत: आप इस दशा का वर्णन कर दीजिए, संभवत: वह लोग कुछ सोचें।[1]

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾

(१७७) उन लोगों की दशा भी बुरी दशा है।[2] जो हमारी आयतों को मिथ्या मानते हैं। तथा अपनी हानि करते हैं।

مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي ۖ وَمَن يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٨﴾

(१७८) जिसको अल्लाह तआला स्वयं मार्ग दर्शन देता है वही संमार्ग पर होता है। तथा जिन्हें अल्लाह कुपथ कर दे वही क्षतिग्रस्त हैं।[3]

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

(१७९) तथा हमने ऐसे बहुत से जिन्न तथा मनुष्य नरक के लिए पैदा किये हैं।[4] जिनके दिल ऐसे हैं, जिनसे नहीं समझते तथा जिन की आंखें ऐसी हैं, जिनसे नहीं देखते, एवं जिनके कान ऐसे हैं जिनसे नहीं सुनते। यह लोग चौपाये (पशु) की भाँति हैं, बल्कि उन से भी अधिक भटके हुए हैं।[5] यही लोग विमुख हैं।

---

[1]तथा इस प्रकार के व्यक्ति से शिक्षा लेकर भटकने से बचें तथा सत्य को अपनायें।

[2]مَثَلًا शब्द विशेषक है। मूल वाक्य इस प्रकार होगा ﴿سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا﴾

[3]यह अल्लाह तआला के उस विधान का वर्णन है जिसकी चर्चा एवं व्याख्या दो, तीन बार की जा चुकी है।

[4]इसका सम्बन्ध भाग्य से है। अर्थात प्रत्येक मानव एवं दानव भूलोक में जाकर क्या करेगा ? इसका ज्ञान अल्लाह तआला को था, उसके अनुसार उसने लिख रखा है। यहाँ उन्हीं नरकियों की चर्चा है। जिन्हें अल्लाह के ज्ञान से नरक वाले ही काम करने थे। आगे उसको कुछ और स्पष्ट कर दिया गया है कि जिन लोगों के अन्दर ये दोष उसी रूप में हों, जिनका वर्णन यहाँ किया है, तो समझ लो उनका परिणाम बुरा है।

[5]अर्थात हृदय, आँख तथा कान अल्लाह तआला ने इसलिए प्रदान की हैं कि मनुष्य इनसे लाभ उठाते हुए अपने प्रभु को समझे, उसके निशानियों को देखे तथा सत्य बात को

(१८०) तथा शुभ नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को नामांकित किया करो।[1] तथा ऐसे लोगों से सम्बन्ध भी न रखो जो उसके नामों में टेढ़ापन करते हैं।[2]

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ۭ سَيُجْزَوْنَ

ध्यानपूर्वक सुने। परन्तु जो व्यक्ति इन चीजों से यह कार्य नहीं लेता, वह उनसे लाभान्वित न होने के कारण पशुओं के समान है, अपितु उनसे भी अधिक भटका हुआ है। इसलिए की पशु फिर भी कुछ अपने लाभ-हानि की समझ रखते हैं। क्योंकि वे लाभदायक चीजों से लाभ उठाते हैं तथा हानिकारक पदार्थों से दूर रहते हैं। परन्तु अल्लाह तआला के मार्गदर्शन से विमुख व्यक्ति के अन्दर तो यह समझ भी नहीं होती कि उसके लिए लाभकारी वस्तुऐं कौन-सी हैं तथा हानिकारक कौन-सी। इसीलिए अगले वाक्य में उन्हें असावधान कहा गया है।

[1] حُسْنٰى अरबी भाषा में أَحْسَن का स्त्रीलिंग है। अल्लाह के इन अच्छे नामों से तात्पर्य अल्लाह के वे नाम हैं जिनसे उसकी विभिन्न विशेषता, उसकी श्रेष्ठता तथा प्रभुत्व एवं उसका सामर्थ्य एवं शक्ति का प्रकाशन होता है। सहीहैन की हदीस में इनकी संख्या ९९ (निन्नावे) बतायी गयी है। तथा फ़रमाया गया,"जो इनकी गणना करेगा, स्वर्ग में जायेगा, अल्लाह तआला विषम है विषमता प्रेमी है।" (बुख़ारी किताबुद दावात बाब लिल्लाहे मेअत ईस्म, मुस्लिम किताबुल जिक्र बाब अस्माये अल्लाह तआला व फ़ज़ले मन अहसाहा) गणना करने का अर्थ यही प्रतीत होता है कि उनके द्वारा प्रार्थना की जाये। कुछ कथनों में इन ९९ नामों का वर्णन किया गया है, परन्तु यह कथन अस्पष्ट हैं तथा विद्वानों ने इसे प्रवेशित माना है अर्थात कथाकारों ने बढ़ाया है। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का भाग नहीं है। इसके अतिरिक्त आलिमों ने यह भी स्पष्ट किया है कि अल्लाह तआला के नामों की संख्या मात्र ९९ नहीं है, अपितु इससे भी अधिक है। (इब्ने कसीर तथा फ़तहुल क़दीर) एक और बात स्पष्ट करता चलूँ कि अल्लाह तआला का अपना नाम जिसे हिन्दी व्याकरण में जाति वाचक संज्ञा कहेंगे मात्र "अल्लाह" है इसके अतिरिक्त सभी उपरोक्त गौणिक हैं।

[2] إلحاد (इल्हाद) का अर्थ है किसी एक ओर टेढ़ा हो जाना। इसी शब्द से لَحْدٌ (लहद) शब्द बना है, जो उस क़ब्र को कहते हैं, जो एक ओर बनायी जाती है। धर्म में इल्हाद का मार्ग अपनाने का अर्थ है कुटिलता तथा कुमार्ग अपनाना। अल्लाह तआला के नामों में इल्हाद तीन प्रकार से हो सकता है। १. अल्लाह तआला के नामों में परिर्वतन कर दिया जाये, जैसे मूर्तिपूजकों ने किया। जैसे अल्लाह के नामों में से "अज़ीज़" से "उज़्ज़ा" तथा "मन्नान" से "मनात" मूर्तियों के नाम बना लिये, २. अथवा अल्लाह के नामों में अपनी ओर से बढ़ा देना, जिसका आदेश अल्लाह ने नहीं दिया, ३. अथवा इसके नामों में कमी कर दी जाये। जैसे उसे किसी एक ही नाम से पुकारा जाये दूसरे विशेषता वाले

مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٨٠﴾

उन लोगों को उनके किये का दण्ड अवश्य मिलेगा।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾

(१८१) तथा हमारे प्राणि वर्ग में एक समुदाय ऐसा भी है जो सत्यानुसार निर्देश करते हैं एवं तदानुसार न्याय करते हैं।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾

(१८२) तथा जो लोग हमारी आयतों (चिन्हों) को झुठलाते हैं हम उनको धीरे-धीरे (पकड़ में) ऐसे लिये जा रहे हैं कि उनको पता भी नही।

وَاُمْلِيْ لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾

(१८३) तथा उनको अवसर देता हूँ। नि:संदेह मेरा उपाय बड़ा सुनियोजित है।[1]

اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ٚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾

(१८४) क्या उन लोगों ने इस बात पर विचार नहीं किया कि उनके साथ को तनिक भी उन्माद नहीं, वह तो केवल एक स्पष्ट डराने वाले हैं।[2]

नामों से पुकारने को बुरा समझा जाये। (फ़तहुल क़दीर) अल्लाह के नाम में इल्हाद का एक रूप यह भी है कि उनमें कष्ट, कल्पना, समानता एवं बेकारी का भाव लिया जाये (ऐसरुत्तफ़ासीर) जैसा कि कुमार्ग समुदायों का चलन रहा है। अल्लाह तआला ने आदेश दिया है इन लोगों से बच कर रहो।

[1]यह वही अवसर है जो अल्लाह तआला परीक्षा के लिए व्यक्तियों तथा वर्गों को देता है फिर जब उसे पकड़ना चाहता है तो कोई बचाने में समर्थ नहीं हो सकता क्योंकि उसका उपाये गंभीर है।

[2]صاحب (साहिब) से तात्पर्य अन्तिम ईशदूत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं जिनको मिश्रणवादी कभी जादूगर कभी पागल (نعوذ بالله) कहते थे अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यह तुम्हारे विचार न करने का परिणाम है। वह तो हमारा पैग़म्बर है, जो हमारे आदेश पहुँचाने वाला तथा उनसे असावधान रहने वालों तथा अवहेलना करने वालों को डराने वाला है।

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن
شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ
قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ
بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

(१८५) तथा क्या उन लोगों ने विचार नहीं किया आकाशों तथा धरती लोक में एवं अन्य वस्तुओं में, जो अल्लाह ने पैदा की हैं तथा इस बात में कि सम्भव है कि उनकी मृत्यु निकट ही आ पहुँची हो ।[1] फिर (क़ुरआन) के पश्चात कौन सी-बात पर ये लोग ईमान लायेंगे ?[2]

مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ
لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾

(१८६) जिसको अल्लाह (तआला) भटका दे उसे कोई मार्ग पर नहीं ला सकता । तथा अल्लाह (तआला) उनको उनके कुमार्ग में भ्रमित छोड़ देता है ।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ
مُرْسَاهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي ۖ
لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۚ

(१८७) यह लोग आप से क़ियामत के[3] सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं कि वह कब घटित होगी ।[4] (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान केवल मेरे

---

[1]अर्थ यह है कि उन वस्तुओं पर भी यदि ये विचार करें तो निश्चित ही ये अल्लाह पर ईमान ले आयें, उसके रसूल की पुष्टि तथा उसे अनुकरण का मार्ग अपना लें तथा उन्होंने अल्लाह के साझीदार बन रखे हैं, उन्हें छोड़ दें तथा इस बात से डरें कि उन्हें इस अवस्था में मृत्यु आ जाये कि वे कुफ्र में हों ।

[2]हदीस से यहाँ तात्पर्य क़ुरआन मजीद है अर्थात नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सचेत करने तथा शुभसूचना देने एवं क़ुरआन करीम के पश्चात भी यदि यह ईमान न लायें तो इनसे बढ़कर उनको डराने वाली चीज़ अन्य क्या होगी जो अल्लाह की ओर से उतरे तथा फिर यह उस पर ईमान लायें ?

[3]ساعة (साअ:) का अर्थ है (क्षण अथवा पल) प्रलय को साअ: इसलिए कहा गया है कि यह सहसा इस प्रकार आ जायेगी कि यह सारी सृष्टि एक पल में नष्ट भ्रष्ट हो जायेगी अथवा हिसाब की शीघ्रता के आधार पर प्रलय के समय को साअत से तुलना की गयी है ।

[4]أرسى يرسي का अर्थ निर्धारण अथवा घटित होना है अर्थात यह प्रलय कब आयेगी अथवा घटित होगी ?

ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْـَٔلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾

प्रभु के पास ही है ।[1] इसको इसके समय पर सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई अन्य प्रदर्शित न करेगा । वह आकाशों तथा धरती की बहुत बड़ी (घटना) होगी ।[2] वह तुम पर सहसा आ पड़ेगी । वह आप से इस प्रकार पूछते हैं ।[3] जैसाकि आप उसकी खोज कर चुके हैं । (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान विशेष रूप से अल्लाह ही के पास है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾

(१८८) (आप) कह दीजिए कि स्वयं मैं अपने विशेष के लिए किसी लाभ का अधिकार नहीं रखता तथा न किसी हानि का । परन्तु इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा हो । तथा यदि मैं परोक्ष की बातें जानता होता तो मैं बहुत से लाभ प्राप्त कर लेता, तथा कोई हानि मुझे नहीं पहुँचती ।[4] मैं तो मात्र डराने

---

[1]अर्थात इसका निश्चित ज्ञान न किसी फ़रिश्ते को है, न किसी ईशदूत को है, अल्लाह के अतिरिक्त यह ज्ञान किसी के पास नहीं, वही उस को समय पर घटित करेगा ।

[2]इसका एक अन्य अर्थ यह है कि इसका ज्ञान आकाश तथा धरती के लिए भारी है, क्योंकि वह गुप्त है तथा गुप्त चीज़ दिलों पर भारी होती है ।

[3]حفي (हफीय्युन) कहते हैं पीछे पड़ कर प्रश्न करने वाले को तथा खोजबीन करने वाले को । अर्थात यह आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से प्रलय के विषय में इस प्रकार प्रश्न करते हैं जैसा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने प्रभु के पीछे पड़कर इस विषय में अवश्य ज्ञान प्राप्त कर लिया है ।

[4]यह आयत इस बात के लिए कितनी स्पष्ट है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अर्न्तयामी नहीं । अर्न्तयामी केवल अल्लाह तआला स्वयं है । परन्तु अत्याचार तथा अज्ञान की सीमा से आगे है कि इसके उपरान्त धर्म में आधुनिकीकरण वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अर्न्तयामी सिद्ध करने का असफल प्रयत्न करते हैं । यद्यपि कुछ युद्धों में आपके पवित्र दाँत भी आहत हुए, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

वाला तथा शुभसूचक हूँ, उन लोगों के लिए जो विश्वास (आस्था) रखते हैं।

(१८९) वह अल्लाह तआला ऐसा है कि जिस ने तुम्हें मात्र एक व्यक्ति से पैदा किया।[1] तथा उसी से उसका जोड़ा बनाया।[2] ताकि वह अपने उस जोड़े से संतोष प्राप्त करे।[3]

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۖ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ

का मुख मंडल भी घायल हुआ, तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह समुदाय किस प्रकार उन्नति करेगा कि जिसने अपने नबी के सिर को घायल कर दिया (हदीस की किताबों में यह घटना तथा निम्नलिखित घटनायें भी लिखीं हैं) आदरणीया आयशा (رضي الله عنها) पर आक्षेप लगा तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूर्ण एक माह तक अत्यधिक व्याकुल तथा अत्यधिक दुखी रहे। एक यहूदी औरत ने आप सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम को निमन्त्रण दिया तथा खाने में विष मिला दिया, जिसे आप ने भी चखा तथा सहाबा ने भी यहाँ तक कि कुछ सहाबा की विष के कारण मृत्यु हो गयी। तथा स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सम्पूर्ण आयु इस विष का प्रभाव प्रतीत करते रहे। ये तथा इसी प्रकार की अन्य घटनायें जिनसे स्पष्ट होता है कि आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम को अज्ञान वश दुख पहुँचा, हानि उठानी पड़ी, जिससे क़ुरआन के द्वारा कथित बात सत्य सिद्ध होती है कि, "यदि मैं अन्तर्यामी होता तो मुझे कोई हानि न पहुँचती।"

[1]आदरणीय आदम से। इसीलिए उनको प्रथम मनु तथा 'मानव पिता' कहा जाता है।

[2]इससे तात्पर्य आदरणीय हव्वा हैं, जो आदरणीय आदम की पत्नी बनीं। उनकी उत्पत्ति आदरणीय आदम से हुई, जिस प्रकार से مِنها के सर्वनाम से, जो एक वचन प्रकट करता है स्पष्ट है। (विस्तार के किए देखिए सूरः निसा आयत संख्या १ की व्याख्या)

[3]अर्थात एक-दूसरे से सुख शान्ति प्राप्त करे इसलिए कि एक वर्ग अपने ही वर्ग से अधिक निकट तथा प्रेम कर सकता है, जो शान्ति प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। घनिष्टता के बिना यह सम्भव ही नहीं है। अन्य स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है

﴿ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُم مَّوَدَّةً وَرَحْمَةً ﴾

"अल्लाह की निशानियों में से यह भी हैं कि उसने तुम्हारे लिए तुम ही में से (अथवा तुम्हारे वर्ग ही में से) जोड़े पैदा किये ताकि तुम उन से शान्ति प्राप्त करो तथा तुम्हारे मध्य उसने प्यार व प्रेम उत्पन्न कर दिया।" (सूरः रूम-२१)

अर्थात अल्लाह तआला ने पुरुष तथा स्त्री दोनों में एक-दूसरे के लिए जो आकर्षण तथा भावना रखी है। प्रकृति की यह देन वह जोड़ा बन कर पूरा करते हैं तथा एक-दूसरे से

بِهٖ ۚ فَلَمَّآ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿١٨٩﴾

फिर पति ने पत्नी से समीपता की,[1] तो उसे गर्भ रह गया, हल्का-सा। फिर वह उसको लेकर चलती फिरती रही।[2] जब वह भार का आभास करने लगी, तो पति-पत्नी दोनों अल्लाह से जो उनका मालिक है प्रार्थना करने लगे कि यदि तूने हम को स्वस्थ संतान प्रदान कर दी तो हम अति कृतज्ञा करेंगे।[3]

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى

(१९०) तो जब अल्लाह ने दोनों को स्वस्थ शिशु प्रदान किया तो अल्लाह के प्रदान में वह दोनों अल्लाह का साझी ठहराने लगे।[4]

घनिष्ठता तथा प्रेम प्राप्त करते हैं। अत: यह सत्य है कि जो आपसी प्रेम पति-पत्नी के मध्य होता है, वह दुनिया के अन्य किसी सम्बन्ध में नहीं होता।

[1]अर्थात यह मानव वंश इस प्रकार बढ़ा तथा आगे चल कर जब उनमें के एक साथी अर्थात पति-पत्नी ने एक-दूसरे से निकटता प्राप्त की। تَغَشَّاهَا का अर्थ 'पत्नी के संग सम्भोग करना' है। अर्थात संभोग करने के लिए ढांका।

[2]अर्थात गर्भ के आरम्भिक दिनों में यहाँ तक कि वीर्य से रूधिर की ग्रन्थियाँ बनने तक तथा रूधिर ग्रन्थियों से भ्रूण बनने तक, गर्भ हल्का ही रहता है, प्रतीत भी नहीं होता है तथा स्त्री को कोई कठिनाई नहीं होती।

[3]भारी हो जाने से तात्पर्य, जब बच्चा गर्भ में बड़ा हो जाता है, तो ज्यों-ज्यों जन्म का समय निकट आता जाता है, माता-पिता के हृदय में भय तथा शंका उत्पन्न होती जाती है। (विशेषरूप से जब स्त्री को स्त्री रोग हो) तो मनुष्य की प्रकृति है कि भय के कारण अल्लाह की ओर अकर्षित होते है। अत: वे दोनों अल्लाह से प्रार्थना करते हैं तथा कृतज्ञता व्यक्त करने का वचन देते हैं।

[4]साझीदार बना देने से तात्पर्य या तो बच्चे का नाम ऐसा रखना है, जैसे इमाम बख्श, पीरांदत्ता, अब्दुशम्स बन्द:अली आदि, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बच्चा अमुक महात्मा अमुक सन्त के (نعوذ بالله) कृपा दृष्टि का परिणाम है अथवा अपने इस विश्वास को प्रकट करे कि हम तो अमुक सन्त महात्मा अथवा अमुक क़ब्र पर गये थे जिसके परिणाम से बच्चा पैदा हुआ। अथवा किसी मृतक के नाम का प्रसाद, भोग, नजर व नियाज आदि कराये अथवा बच्चे को किसी क़ब्र पर ले जाकर माथा टेकाये कि उनकी

اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٩٠﴾

अत: अल्लाह पवित्र है उनके मिश्रण करने से।

اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿١٩١﴾

(१९१) क्या ऐसों को साझीदार ठहराते हैं, जो किसी वस्तु को न बना सकें, स्वयं उनको ही बनाया गया हो।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿١٩٢﴾

(१९२) तथा वह उनको किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते, और वे स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकते।

وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ۭ سَوَاۗءٌ عَلَيْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿١٩٣﴾

(१९३) तथा यदि तुम कोई बात बताने को उनको पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें।[1] तुम्हारे लगाव से दोनों बातें समान हैं चाहे तुम उनको पुकारो अथवा मौन रहो।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ عِبَادٌ اَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ

(१९४) वास्तव में तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (उपासना करते) हो वह भी तुम ही जैसे दास हैं।[2] तो तुम उनको पुकारो

कृपा से बच्चा प्राप्त हुआ। यह सभी अवस्थायें अल्लाह का साझीदार बनाने की हैं। जो दुर्भाग्य से मुसलमानों में भी सामान्य रूप से व्याप्त है। अगली आयत में अल्लाह तआला शिर्क का खण्डन कर रहा है।

[1]अथवा तुम्हारी बातों के अनुसार कर्म नहीं करेंगे। एक अन्य भावार्थ इसका यह भी है कि यदि तुम उनसे ज्ञान तथा मार्गदर्शन माँगो, तो वह तुम्हारी बात नहीं मानेंगे, न तुम्हें कोई उत्तर ही देंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[2]अर्थात जब वह जीवित थे अपितु अब तो तुम उनसे अधिक योग्य हो। अब वह देख नहीं सकते, तुम देख सकते हो वह सुन नहीं सकते, तुम सुनते हो। वह किसी की बात समझ नहीं सकते, तुम समझते हो। वह उत्तर नहीं दे सकते, तुम देते हो। इससे ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजक जिनकी मूर्तियाँ बना कर पूजते थे, वह भी पहले अल्लाह के भक्त थे अर्थात मनुष्य ही थे। जैसे आदरणीय नूह के समुदाय की पाँच मूर्तियों के विषय में सहीह बुख़ारी में सविस्तार स्पष्ट है कि वह अल्लाह के परम भक्त थे।

فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

फिर उनको चाहिए कि वह तुम्हारा कहना कर दें, यदि तुम सच्चे हो ।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظِرُونِ ﴿١٩٥﴾

(१९५) क्या उनके पैर हैं जिनसे वे चलते हों अथवा उनके हाथ हैं जिससे किसी चीज़ को थाम सकें अथवा उनकी आँखें हैं जिनसे देखते हों, अथवा उनके कान हैं जिनसे वे सुनते हैं ।[1] (आप) कह दीजिए कि तुम अपने सभी साझीदारों को बुला लो, फिर मुझे (हानि पहुँचाने की) उपाय करो, फिर मुझे तनिक अवसर न दो ।[2]

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾

(१९६) नि:संदेह मेरा सहायक अल्लाह ही है, जिसने यह धर्मशास्त्र (पवित्र क़ुरआन) उतारा तथा वह सदाचारी भक्तों की सहायता करता है ।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

(१९७) तथा तुम जिन लोगों को, अल्लाह को छोड़ कर, पुकारते (उपासना करते) हो वह तुम्हारी कुछ सहायता नहीं कर सकते तथा न वह अपनी सहायता कर सकते हैं ।[3]

[1]अर्थात अब इनमें से कोई शक्ति भी उनमें नहीं है, मरने के साथ ही देखने, सुनने समझने तथा चलने की शक्ति समाप्त हो गयी अब उन से सम्बन्धित या तो पत्थर अथवा लकड़ी की स्वयं बनायी हुई मूर्तियाँ हैं, अथवा गुम्बद, कुब्बे तथा आस्ताने हैं जो उनकी क़ब्रों पर बना लिये गये हैं । इस प्रकार धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा है ।

[2]अर्थात यदि तुम अपने वादे में सच्चे हो कि यह तुम्हारी सहायता करेंगे, तो इनसे कहो कि मेरे विरुद्ध षडयन्त्र रचायें ।

[3]जो अपनी सहायता आप करने में सक्षम न हो, वे भला अन्यों की सहायता क्या करेंगे ।

जो खुद मोहताज होवे दूसरे का : भला उससे मदद का माँगना क्या ।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

(१९८) तथा यदि उनको कोई बात बताने को पुकारो तो उसको न सुनें ।[1] तथा उनको आप देखते हैं कि वह आपको देख रहे हैं तथा वह कुछ भी नहीं देखते ।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

(१९९) आप क्षमा का मार्ग अपनायें ।[2] पुण्य के कार्य की शिक्षा दें ।[3] तथा अशिक्षितों से अलग रहें ।[4]

---

[1]इसका यही भावार्थ है जो आयत संख्या १९३ का है ।

[2]कुछ आलिमों ने इसका अर्थ यह किया है أي : ما فضل (خُذْ مَا عَفَا لَكَ مِنْ أَمْوَالِهِمْ) अर्थात "जो आवश्यकता से अधिक धन हो, वह ले लो ।" तथा यह ज़कात की अनिवार्यता से पूर्व का आदेश है । (फ़तहुल बारी, भाग ८, पृष्ट ३०५) । परन्तु अन्य व्याख्याकारों ने इससे नैतिक निर्देश अर्थात क्षमा करना तात्पर्य लिया है तथा इमाम जरीर तथा इमाम बुख़ारी आदि ने इसी को प्राथमिकता दी है । अत: इमाम बुख़ारी ने इसके पक्ष में आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की एक घटना का वर्णन किया है । उयेन: बिन हिस्न आदरणीय उमर (رضي الله عنه) की सेवा में उपस्थित हुए तथा आकर उन पर टिप्पणी करने लगे कि आप हमें न तो पूरा धन प्रदान करते हैं तथा न हमारे मध्य न्याय करते हैं, जिस पर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) क्रोधित हुए यह परिस्थित देख कर आदरणीय उमर (رضي الله عنه) के सलाहकार हुर बिन क़ैस ने (जो उयैन: के भतीजे थे) आदरणीय उमर (رضي الله عنه) से कहा कि अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को आदेश दिया था । ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾ "क्षमा का मार्ग अपनाईये तथा पुण्य का उपदेश दीजिए एवं अज्ञानियों से बचिये । तथा यह भी अज्ञानियों में से है ।" जिस पर अदरणीय उमर (رضي الله عنه) ने क्षमा कर दिया । "तथा आदरणीय उमर (رضي الله عنه) अल्लाह की किताब का आदेश सुनकर तुरन्त माथा टेक देते थे ।" (सहीह बुख़ारी तफ़सीर सूर: अल-आराफ़) इसका समर्थन इन हदीसों से भी होता है, जिन में अत्याचार के बदले क्षमा कर देने, कष्टों के बदले कृपा तथा बुराई के बदले भलाई एवं उपकार करने पर बल दिया गया है ।

[3]عُرْف (उर्फ़) से तात्पर्य مَعروف (मारूफ़) अर्थात पुण्य है ।

[4]अर्थात जब आप पुण्य के कार्य करने के आदेश देने को पूर्ण रूप से इस प्रकार समाप्त कर लें कि अब उनके पास कोई तर्क न हो तथा उसके उपरान्त भी न मानें तो, उनसे मुख मोड़ लें तथा उनके झगड़ो, तथा मूर्खताओं का उत्तर न दें ।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

(२००) तथा यदि आपको कोई शंका शैतान की ओर से आने लगे तो अल्लाह की शरण माँग लिया कीजिए ।[1] निःसन्देह वह अत्यधिक सुनने वाला तथा अत्यधिक जानने वाला है ।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

(२०१) निःसंदेह जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जब उनको कोई शंका शैतान की ओर से आ जाती है, तो वह याद में लग जाते हैं । अतः सहसा उनकी आंखें खुल जाती हैं ।[2]

وَإِخْوَٰنُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

(२०२) तथा जो शैतानों के अनुगामी हैं वह उनको विपदा में खींचे लिए जाते है फिर वे नहीं रुकते ।[3]

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِـَٔايَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ۚ هَٰذَا

(२०३) तथा जब आप कोई चमत्कार उनके समक्ष प्रस्तुत नहीं करते तो वह लोग कहते हैं कि आप यह चमत्कार क्यों न लाये ।[4] (आप) फ़रमा दीजिए कि मैं उसका पालन करता हूँ

---

[1]तथा इस समय यदि शैतान आपको उत्तेजित करने का प्रयत्न करे, तो अल्लाह की शरण मांगे ।

[2]इसमें अल्लाह से भय रखने वालों के विषय में बताया गया है कि वे शैतान से सावधान रहते हैं । طائف अथवा طيفٌ उस मानसिक विचारों को कहते हैं जो दिल में आये अथवा स्वप्न में आये । यहां उसे शैतान के द्वारा डाली गयी शंकाओं के लिए प्रयोग हुआ है, क्योंकि शैतान के द्वारा शंकाऐं भी मानसिक विचारों में ही उत्पन्न होते हैं । (फ़तहुल क़दीर)

[3]अर्थात शैतान काफ़िरों को भटकाने की ओर खींच ले जाता है, फिर वह काफ़िर (भटकावे की ओर जाने में) अथवा शैतान उनको ले जाने में आनाकानी नहीं करता है । अर्थात لا يُقصرون क्रिया के कर्ता अधर्मी भी बन सकते हैं तथा "शैतान" भी ।

[4]तात्पर्य ऐसा चमत्कार है जो उनके कहने पर उनकी इच्छानुसार प्रदर्शित किया जाये जैसे उनकी कुछ माँगों की सूरः बनी इस्राईल आयत ९० से ९३ तक में चर्चा की गयी है ।

بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠٣﴾

जो मुझ पर मेरे प्रभु की ओर से आदेश भेजा गया है। यह मानो तुम्हारे पोषक की ओर से बहुत से तर्क हैं एवं निर्देश तथा कृपा उन लोगों के लिये जो विश्वास रखते हैं।[1]

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَأَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٢٠٤﴾

(२०४) तथा जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक सुनो एवं मौन साध लो आशा है कि तुम पर कृपा हो।[2]

---

[1] لولا اجتبيتها का अर्थ है कि तू अपने पास से ही क्यों नहीं बना लाता। इसके उत्तर में फ़रमाया गया) कि आप कह दें, चमत्कार प्रस्तुत करना मेरे वश में नहीं है। मैं तो अल्लाह की प्रकाशनाओं (वह्यी) का पालन करने वाला हूँ। हाँ, यदि यह क़ुरआन जो मेरे पास आया है, यह स्वयं ही एक बहुत बड़ा चमत्कार है। इसमें तुम्हारे प्रभु की ओर से निर्देश (सूचनायें तथा शुभ सन्देश) तथा मार्गदर्शन एवं कृपा है यदि कोई ईमानवाला हो।

[2] यहाँ काफ़िरों को कहा जा रहा है जो क़ुरआन के पढ़ते समय शोर करते थे तथा अपने साथियों से कहते थे :

﴿لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا﴾

"यह क़ुरआन मत सुनो तथा शोर करो।" (सूरः हा॰ मीम॰ सजदः-२६)

उन से कहा जा रहा है कि इसके बजाय यदि ध्यानपूर्वक सुनो तथा शान्त रहो, तो शायद अल्लाह तआला तुम्हें मार्गदर्शन प्रदान कर दे। इस प्रकार तुम अल्लाह की कृपा के अधिकारी बन जाओ।

कुछ विद्वान इसे सामान्य रूप से लेते हैं अर्थात जब भी क़ुरआन पढ़ा जाये चाहे नमाज़ हो अथवा नमाज़ न हो सबको शान्त हो कर सुनने का आदेश है। इस सामान्य आदेश से भाव निकाल कर जोर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़तदी (नमाज़ में इमाम के अतिरिक्त सभी नमाजियों को कहते हैं) के सूरः फ़ातिहा पढ़ने को भी क़ुरआन के इस आदेश के विरुद्ध मानते हैं। जब कि उच्च स्वर से पढ़ी जाने वाली नमाजों में इमाम के पीछे सूरः फ़ातिहा पढ़नें के लिए आदेश नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सहीह हदीसों से सिद्ध है, जैसाकि इसके मक्की होने से भी सिद्ध होता है। परन्तु यदि इसे सामान्य रूप से मान भी लिया जाये, तब भी इस सामान्य से मुक़तदियों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाल दिया। तथा इस प्रकार इस आयत के सामान्य होने के उपरान्त भी उच्च स्वर से पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में मुक़तदियों को सूरः

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿٢٠٥﴾

(२०५) तथा हे, मानव, अपने मन में विनीत एवं भयभीत होकर अपने पोषक को स्मरण करता रह प्रातः एवं संध्या काल में उच्च स्वर से आवाज़ को कम करके तथा अचेतों की गणना में न होना।

اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ﴿٢٠٦﴾

(२०६) निःसंदेह जो तेरे पोषक के समीप हैं वे उसकी इबादत से अहंकार नहीं करते। तथा उसकी पवित्रता का वर्णन करते तथा उसको सजदा करते हैं।

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ

सूरतुल अंफ़ाल-८

सूरः अंफाल मदीना में उतरी तथा इसकी पचहत्तर आयतें एवं दस रुकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से प्रारम्भ करता हूँ, जो अत्यन्त कृपालु तथा अत्यन्त दयालु है

फ़ातिहा अवश्य पढ़नी होगी। क्योंकि क़ुरआन के इस सामान्य आदेश से मुक़तदियों की छूट के लिए सहीह हदीस तथा ठोस हदीसों से सिद्ध होता है। जिस प्रकार क़ुरआन की अन्य सामान्य रूप से आदेशित आयतों में कुछ को छूट प्राप्त है उसी प्रकार इस आयत को भी मान्यता प्राप्त है। जैसे ﴿الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا﴾ (सूरः नूर-२) के सामान्य आदेश से ऐसे विवाहित व्याभिचारी निष्कासित हैं, तथा السارق و السارقة के सामान्य आदेश से ऐसे चोर निष्कासित हैं जिसने चौथाई दीनार से कम मूल्य की चीज़ चोरी की हो अथवा चोरी की हुई चीज़ सुरक्षा में न रखी हो आदि। इसी प्रकार ﴿فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا﴾ के सामान्य आदेश से मुक़तदी निष्कासित होंगे। तथा उनके लिए उच्च स्वर में पढ़ी जाने वाली नमाज़ों में भी सूरः फ़ातिहा पढ़ना आवश्यक होगा क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस पर बल दिया है (जैसाकि सूरः फ़ातिहः की व्याख्या में यह हदीसें वर्णन की गयी हैं)।

يَسْـَٔلُونَكَ عَنِ الْأَنفَالِ ۖ قُلِ الْأَنفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ ﴿١﴾

(१) ये लोग आप से युद्ध में प्राप्त माल के विषय में पूछते हैं ।[1] आप कह दीजिए कि वे युद्ध से प्राप्त माल अल्लाह के हैं तथा रसूल के हैं ।[2] इसलिए तुम अल्लाह से डरो तथा अपने आपसी सम्बन्धों को सुधारो तथा अल्लाह तआला एवं उसके रसूल की आज्ञा का पालन करो, यदि तुम ईमानवाले हो ।[3]

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٢﴾

(२) बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह (तआला) का वर्णन होता है, तो उन के हृदय भयभीत हो जाते हैं । तथा जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती हैं, तो वे आयतें उनके ईमान को और अधिक कर

---

[1]أنفال शब्द نَفل शब्द का बहुवचन है, जिसका अर्थ है अधिक । ये उस माल-सामग्री को कहा जाता है जो काफ़िरों के साथ युद्ध में हाथ लगे, इसे अंफाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उन चीज़ों में से है जो पूर्व के समुदायों के लिए निषेध थीं । अर्थात यह मुसलमानों के लिए एक अधिक वस्तु मान्य की गयी है अथवा इसलिए कि ये धर्मयुद्ध के प्रतिफल से (जो परलोक में मिलेगा) एक अधिक चीज़ है, जो कई बार दुनिया ही में मिल जाती है ।

[2]अर्थात इसका निर्णय करने के अधिकारी हैं । अल्लाह के रसूल, अल्लाह के आदेश से इसे विभाजित करेंगे, न कि तुम आपस में जिस प्रकार चाहो विभाजित कर लो ।

[3]इसका अर्थ यह हुआ कि वर्णित तीनों बातों के अनुसार कर्म किये बिना ईमान पूर्ण नहीं । इससे अल्लाह का भय (तक़्वा), आपस में सम्बन्धों का सुधार, तथा अल्लाह तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालन की विशेषता को स्पष्ट किया गया है । विशेष रूप से युद्ध में प्राप्त सामग्री के बँटवारे में इन तीनों बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है । क्योंकि माल के बंटवारे में आपसी सम्बन्धों के बिगड़ने का अधिक भ्रम रहता है, इसलिये आपसी सम्बन्ध के सुधारने पर बल दिया गया है । हेराफेरी, तथा विश्वासघात की सम्भावना रहती है इसलिए अल्लाह के भय का आदेश दिया गया है । इसके उपरान्त भी कोई कमी रह जाये तो उसका समाधान अल्लाह तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण पर आधारित है ।

देती हैं। तथा वह लोग अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं।[1]

[1]इन आयतों में ईमानवालों के चार गुण बताये गये हैं। १. यह अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा का पालन करते हैं, न कि केवल अल्लाह का अर्थात क़ुरआन का, २. अल्लाह का वर्णन सुन कर उसकी शक्ति तथा महिमा से प्रभावित होकर दिल काँप उठते हैं, ३. क़ुरआन पढ़नें से उनके ईमान में बढ़ोत्तरी होती है, ४. वे अपने प्रभु पर भरोसा करते हैं। तवक्कुल का अर्थ है कि प्राप्त साधनों को अपनाने के उपरान्त अल्लाह पर भरोसा करते हैं। अर्थात प्राप्त साधन से मुँह नहीं मोड़ते क्योंकि उनको अपनाने का अल्लाह ने आदेश दिया है, परन्तु प्राप्त साधनों को ही सब कुछ नहीं समझ लेते अपितु उनको यह पूर्ण विश्वास होता है कि वास्तविक रूप से करने वाला अल्लाह ही है, इसलिए जब तक अल्लाह की इच्छा नहीं होगी, यह प्राप्त साधन कुछ नहीं कर सकते तथा इस विश्वास तथा भरोसे के आधार पर फिर भी अल्लाह की सहायता तथा कृपा प्राप्त करने के लिए एक क्षण के लिए भी असावधान नहीं होते। आगे इनके अन्य गुणों का वर्णन है तथा इन गुणों से अलंकृत लोगों के लिए अल्लाह की ओर से सच्चे मुसलमान होने का प्रामण पत्र तथा मोक्ष एवं कृपा तथा पाक रोज़ी की शुभ सूचना है। (अल्लाह तआला हमें भी उनमें सम्मिलित कर ले)

वद्र के युद्ध का दृश्य : बद्र का युद्ध सन् २ हिजरी में काफ़िरों के साथ मुसलमानों का प्रथम युद्ध था। इसके अतिरिक्त यह बिना किसी योजना तथा तैयारी के अचानक हुआ। इसके अतिरिक्त बिना साधन-सामग्री के कारण कुछ मुसलमान बौद्धिक रूप से इसके लिए तैयार भी नहीं थे। सारांश में उसका दृश्य इस प्रकार है कि आदरणीय अबू सुफ़ियान (जो अभी मुसलमान नहीं हुए थे) के नेतृत्व में एक व्यापारिक क़ाफ़िला सीरिया से मक्का जा रहा था, चूँकि मुसलमानों की भी बहुत-सी माल-सामग्री मक्के में हिजरत के कारण रह गयी थी अथवा काफ़िरों ने छीन लिया था। इसके अतिरिक्त काफ़िरों की शक्ति तथा अभिमान को तोड़ना भी समय की माँग थी। इन सभी बातों के कारण रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस क़ाफ़िले पर आक्रमण करने की योजना बनायी तथा मुसलमान इस विचार से मदीने से चल पड़े। अबू सुफ़ियान को भी इस बात की सूचना मिल गयी। अत: उन्होंने अपना मार्ग बदल दिया तथा मक्के में सूचना भेजवा दी, जिसके कारण अबूजहल एक सेना लेकर अपने क़ाफ़िले की सुरक्षा के लिए निकल पड़ा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस बात की सूचना मिली, तो यह बात सहाबा के समक्ष रख दी तथा अल्लाह का वायदा भी बतलाया कि इन दोनों (व्यापारिक क़ाफ़िला तथा सेना) में से एक तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी फिर भी कुछ सहाबा ने असमंजस्य का प्रर्दशन किया तथा व्यापारिक क़ाफ़िले का पीछा करने की राय दी, जब कि अन्य सभी सहाबा ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के

ٱلَّذِينَ يُقِيمُونَ ٱلصَّلَوٰةَ وَمِمَّا رَزَقْنَٰهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣﴾

(३) जो कि नमाज़ नियमित रूप से पढ़ते हैं तथा हमने जो कुछ उनको दिया है वे उस में से व्यय करते हैं।

أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَٰتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٤﴾

(४) सच्चे ईमानवाले यही लोग हैं, उनके लिए बड़े पद हैं, उनके प्रभु के पास तथा मोक्ष एवं सम्मान की जीविका है।

كَمَآ أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنۢ بَيْتِكَ بِٱلْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ ٱلْمُؤْمِنِينَ لَكَٰرِهُونَ ﴿٥﴾

(५) जैसाकि आपके प्रभु ने आप के घर से सत्य के साथ आपको निकाला,[1] तथा मुसलमानों का एक गुट इसको भारी समझता था।[2]

يُجَٰدِلُونَكَ فِى ٱلْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى ٱلْمَوْتِ وَهُمْ يَنظُرُونَ ﴿٦﴾

(६) वह स्पष्ट हो जाने के पश्चात [3] सत्य के विषय में आप से झगड़ा कर रहे थे जैसेकि वह मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हों तथा (उसे) देख रहे हों।[4]

साथ युद्ध में लड़ने के लिए पूर्ण समर्थन का विश्वास दिलाया। इसी कारण यह आयतें उतरी।

[1]अर्थात जिस प्रकार युद्ध में प्राप्त माल-सामग्री के बँटवारे की समस्या मुसलमानों के मध्य मतभेद का कारण बनी हुई थी फिर उसे अल्लाह तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हवाले कर दी गयी थी, तो उसी में मुसलमानों की भलाई थी उसी प्रकार आपका मदीने से निकलना, तथा फिर आगे चल कर व्यापारिक काफ़िले के बजाय क़ुरैश की सेना से मुठभेड़ हो जाना, यद्यपि कुछ आज्ञाकारियों को उचित न लगा था, परन्तु इसमें भी मुसलमानों का अन्ततः लाभ था।

[2]यह अप्रसन्नता क़ुरैश की सेना से लड़ने के विषय में थी, जिसको कुछ लोगों ही ने प्रकट किया तथा इस का कारण भी साधन विहीन होना था।

[3]अर्थात यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि क़ाफ़िला तो बच कर निकल गया है तथा अब क़ुरैश की सेना ही सामने है, जिससे लड़ाई टलना असम्भव है।

[4]यह बिना साधन-सामग्री की अवस्था में लड़ने के कारण से कुछ मुसलमानों की जो अवस्था थी, इसका प्रदर्शन है।

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَن يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾

(७) तथा तुम लोग उस समय को याद करो कि जब कि अल्लाह तुम से उन दो गुटों में से एक का वायदा करता था कि वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा ।[1] तथा तुम इस आशा में थे कि बिना हथियारों वाला गुट तुम्हारे हाथ आ जाये ।[2] तथा अल्लाह तआला को स्वीकार था कि अपने आदेश से सत्य का सत्य होना सिद्ध कर दे तथा उन काफ़िरों की जड़ काट दे ।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ ﴿٨﴾

(८) ताकि सत्य का सत्य होना एवं असत्य का असत्य होना सिद्ध कर दे, चाहे ये अपराधी लोग पसन्द न करें ।[3]

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ﴿٩﴾

(९) उस समय को याद करो जब कि तुम अपने पालक से विनती कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हज़ार फ़रिश्तों से सहायता दूँगा जो निरन्तर चले आयेंगे ।[4]

[1]अर्थात या तो व्यापारिक क़ाफ़िला तुम्हें मिल जायेगा, जिससे तुम्हें लड़ाई के बिना अत्यधिक माल-सामग्री मिल जायेगी, दूसरी अवस्था में कुरैश की सेना से तुम्हारा मुक़ाबिला होगा तथा तुम्हारी विजय होगी तथा युद्ध से प्राप्त माल-सामग्री मिलेगी ।

[2]अर्थात व्यापारिक क़ाफ़िला, ताकि बिना लड़े माल हाथ लग जाये ।

[3]परन्तु अल्लाह इसके विपरीत यह चाहता है कि कुरैश की सेना से तुम्हारा युद्ध हो, ताकि काफ़िरों की शक्ति तथा गर्व को धक्का पहुँचे, चाहे यह बात अपराधियों (मूर्तिपूजकों) के लिए अप्रिय ही हो ।

[4]इस युद्ध में मुसलमानों की संख्या ३१३ थी, जब कि काफ़िर उनके तीन गुने (अर्थात) लगभग एक हज़ार थे, फिर मुसलमान निहत्थे थे तथा अस्त्र-शस्त्र हीन थे, जबकि काफ़िरों के पास अस्त्र-शस्त्रों की अधिकता थी । इन परिस्थितियों में मुसलमानों को सहारा केवल अल्लाह ही की शक्ति का था, जिससे वे विनम्र निवेदन एवं विनती कर रहे थे, स्वयं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक खेमें में आग्रह पूर्ण विनय

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿١٠﴾

(१०) तथा अल्लाह (तआला) ने यह सहायता मात्र इस कारण की कि शुभ सूचना हो तथा तुम्हारे दिलों को संतोष हो जाये। तथा विजय मात्र अल्लाह की ओर से है।[1] जो कि अत्यधिक शक्तिशाली विवेकशील है।

اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ وَ يُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْاَقْدَامَ ﴿١١﴾

(११) उस समय को याद करो, जबकि (अल्लाह तआला) तुम पर ओंघाई अच्छादित कर रहा था, अपनी ओर से शान्ति प्रदान करने के लिए।[2] तथा तुम पर आकाश से पानी वर्षा रहा था कि इस पानी द्वारा तुम को पवित्र कर दे तथा तुमसे शैतानी शंकाओं को दूर कर दे।[3]

पूर्वक प्रार्थना में लीन थे सहीह बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी)। अत: अल्लाह तआला ने प्रार्थनायें स्वीकार कीं तथा एक हज़ार फ़रिश्ते एक-दूसरे के पीछे निरन्तर मुसलमानों की सहायता केलिए आ गये।

[1]अर्थात फ़रिश्तों का उतरना तो केवल शुभ सूचना तथा तुम्हारे दिलों की शान्ति के लिए था, अपितु मूल सहायता तो अल्लाह की ओर से थी। जो फ़रिश्तों के बिना भी तुम्हारी सहायता कर सकता था, फिर भी इससे यह समझना भी उचित नहीं कि फ़रिश्तों ने युद्ध में भाग नहीं लिया। हदीसों से ज्ञात होता है कि युद्ध में फ़रिश्तों ने भाग लिया तथा कई काफ़िरों का वध भी किया, (देखिए सहीह बुख़ारी तथा सहीह मुस्लिम किताबुल मग़ाज़ी व फ़ज़ायेल अस्सहाबा)

[2]ओहद के युद्ध की भाँति बद्र के युद्ध में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर ऊँघ प्रभावशाली कर दिया, जिससे उनके दिलों के भार हल्के हो गये तथा संतोष एवं शान्ति की एक विशेष अवस्था उन पर प्रभावी हो गया।

[3]तीसरा उपहार यह किया कि वर्षा कर दिया, जिससे एक तो रेत में आवागमन सरल हो गया दूसरे वज़ू तथा पवित्रता में सरलता हो गयी। तीसरे इस से शैतानी शंकाओं का खण्डन कर दिया, जो वह ईमानवालों के दिलों में डाल रहा था कि तुम अल्लाह के अच्छे बन्दे होते हुए भी पानी से दूर हो, दूसरे अपवित्रता की अवस्था में तुम लड़ोगे तो कैसे अल्लाह की कृपा तथा दया तुम्हें प्राप्त होगी ? तीसरे तुम प्यासे हो, जबकि तुम्हारे शत्रुओं के पास पानी है इत्यादि।

तथा तुम्हारे दिलों को दृढ़ कर दे तथा तुम्हारे पाँव जमा दे ।[1]

(१२) उस समय को याद करो, जब कि आप का प्रभु फ़रिश्तों को आदेश दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम ईमान वालों का साहस बढ़ाओ । मैं अभी काफ़िरों के दिलों में भय डालता हूँ ।[2] इसलिए तुम गर्दनों पर मारो और उनके जोड़-जोड़ पर चोट लगाओ ।[3]

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَٰٓئِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ﴿١٢﴾

(१३) यह इस बात का दण्ड है कि उन्होंने अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध किया तथा जो अल्लाह का तथा उसके रसूल का विरोध करता है, तो अल्लाह तआला कड़ा दण्ड देने वाला है ।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

(१४) तो यह दण्ड का स्वाद चखो तथा ध्यान रहे कि कफ़िरों के लिए नरक की यातना निर्धारित ही है ।

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

---

[1]यह चौथा उपहार है जिसने दिलों में दृढ़ता प्रदान की ।

[2]यह अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों के द्वारा तथा विशेष रूप से अपनी ओर से जिस-जिस प्रकार मुसलमानों की बद्र में सहायता की, उसका वर्णन है ।

[3]بَنَان (बनान) का अर्थ हाथों तथा पैरों की उँगलियों के पोर हैं । अर्थात किनारे, यह किनारे काट दिये जायें तो स्पष्ट है कि वे विवश हो जायेंगे । इस प्रकार वह हाथ से तलवार चलाने तथा पैरों से भागने योग्य नहीं रहेंगे ।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا لَقِيتُمُ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ ٱلْأَدْبَارَ ﴿١٥﴾

(१५) हे ईमान वालो ! जब तुम काफ़िरों से सुठभेड़ करो तो उन से पीठ मत फेरना ।[1]

وَمَن يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُۥٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَمَأْوَىٰهُ جَهَنَّمُ ۖ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ ﴿١٦﴾

(१६) तथा जो व्यक्ति उन से उस अवसर पर पीठ फेरेगा, परन्तु यदि कोई लड़ाई के लिए पैंतरा बदलता हो अथवा जो अपने गुट की ओर शरण लेने आता हो, (वह अलग है)[2] शेष अन्य जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के क्रोध को पायेगा । तथा उसका ठिकाना नरक होगी तथा वह बहुत ही बुरा स्थान है ।[3]

---

[1] زحفا (जहफन) शब्द का अर्थ है एक-दूसरे के सामने होना तथा संघर्ष करना । अर्थात मुसलमान तथा काफ़िर जब सम्मुख हो कर लाम बन्दी करें तो पीठ फेर कर भागने की आज्ञा नहीं है । एक हदीस में है«اَجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ»"सात विनाशकारी से बचो ।" इन सात में से एक «وَالتَّوَلِّي يومَ الزَّحْفِ». "लड़ाई के दिन पीठ फेर जाना है ।" (सहीह बुख़ारी संख्या २७६६ किताबुल वसाया, मुस्लिम किताबुल ईमान)

[2] पिछली आयत में पीठ फेरने से जो मना किया गया है । दो अवस्थायें इससे विलग हैं । एक تحرّف की, दूसरी تحيّز की । تحرّف का अर्थ है एक ओर फिर जाना । "अर्थात युद्ध में यौद्धिक योजना के अनुसार अथवा शत्रु को धोखे में डालने के विचार से लड़ता-लड़ता एक ओर फिर जाये, जिससे शत्रु यह समझे कि यह पराजित होकर भाग रहा है, परन्तु फिर एक क्षण में चाल बदल कर सहसा शत्रु पर आक्रमण कर दे । यह पीठ दिखाना नहीं है, अपितु यह यौद्धिक योजना है, जो कई बार आवश्यक तथा लाभकारी होता है ।" تحيّز का अर्थ है मिलना तथा शरण लेना । कोई सैनिक लड़ता-लड़ता अकेला रह जाये, तो वह किसी प्रयोजन से युद्ध के मैदान में एक किनारे हो जाये ताकि वह अपने गुट की शरण प्राप्त कर सके तथा उसकी सहायता से पुन: आक्रमण करे । यह दोनों अवस्थायें उचित हैं । तथा धार्मिक रूप से मान्य हैं ।

[3] अर्थात उपरोक्त दोनों दशा के सिवाय यदि कोई सैनिक समर भूमि से मुख मोड़ेगा, उसके लिए यह कठोर चेतावनी आयी है ।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ص وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ج وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ط اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٧﴾

(१७) तो तुमने उन्हें हत नहीं किये, परन्तु अल्लाह तआला ने उन्हें हत किया ।[1] तथा आप ने (धूल की मुट्ठी) नहीं फेंकी, परन्तु अल्लाह तआला ने फेंकी ।[2] तथा ताकि मुसलमानों कोअपनी ओर से उनकी प्रयास का अत्यधिक फल प्रदान करे[3] नि:सन्देह अल्लाह तआला अत्यधिक सुनने वाला अत्यधिक जानने वाला है ।

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٨﴾

(१८) (एक बात तो) यह हुई (दूसरी बात है) कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की योजनाओं को विफल करना था ।[4]

[1]अर्थात बद्र के युद्ध का यह सारा विवरण तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत कर दिया गया है तथा जिस-जिस प्रकार से अल्लाह ने तुम्हारी सहायता की है, उसके स्पष्टीकरण के पश्चात तुम यह न समझ लेना कि काफ़िरों का वध, यह तुम्हारा कारनामा है । नहीं, अपितु यह अल्लाह ही की सहायता का परिणाम है, जिसके कारण तुम्हें यह शक्ति प्राप्त हुई । इसलिए वास्तव में उनका वध करने वाला अल्लाह तआला है ।

[2]बद्र के युद्ध में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कंकरियों को मुट्ठी में भर कर काफ़िरों की ओर फेंका था, जिसे एक तो अल्लाह तआला ने काफ़िरों के मुँह तथा आँखों तक पहुँचा दिया । दूसरे उसमें यह गुण उत्पन्न कर दिया कि जिसके कारण उनकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया तथा उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता था, यह चमत्कार भी, जो उस समय अल्लाह की सहायता से प्रकट हुआ, मुसलमानों की सफलता में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ । अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि हे पैग़म्बर ! कंकरियाँ नि:संदेह तुम ने फेंकी थी, परन्तु उसमें गुण हम ने उत्पन्न किये थे, यदि हम इसमें यह गुण उत्पन्न न करते, तो यह कंकरियाँ क्या कर सकती थीं ? इसलिए वास्तव में यह भी हमारा ही कार्य था, न कि आप का ।

[3]بلاء (बलाअन) यहाँ उपकार के अर्थ में प्रयोग हुआ है । अर्थात अल्लाह का यह समर्थन व कृपा अल्लाह का उपकार है, जो ईमानवालों पर हुआ ।

[4]दूसरा उद्देश्य इसका काफ़िरों की योजनाओं को निर्बल करना तथा उनकी शक्ति एवं गर्व को तोड़ना था ।

إِن تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ ۖ وَإِن تَنتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِن تَعُودُوا نَعُدْ وَلَن تُغْنِيَ عَنكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

(१९) यदि तुम लोग निर्णय चाहते हो, तो वह निर्णय तुम्हारे समक्ष विधान है ।[1] तथा यदि रुक जाओ तो यह तुम्हारे लिए अति श्रेष्ठ है, तथा यदि तुम फिर भी वही कार्य करोगे, तो हम भी फिर वही कार्य करेंगे तथा तुम्हारा समुदाय तुम्हारे तनिक काम नहीं आयेगा । चाहे कितनी अधिक संख्या हो । तथा वास्तविक बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنتُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾

(२०) हे ईमान वालो ! अल्लाह का तथा उस के रसूल (संदेशवाहक) का कहना मानो तथा उस (का कहना मानने) से मुख न फेरो सुनते जानते हुए ।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

(२१) तथा तुम उन लोगों के समान न होना, जो दावा तो करते हैं कि हमने सुन लिया हालाँकि वह सुनते (सुनाते) कुछ नहीं ।[2]

---

[1]अबूजहल आदि क़ुरैश की सेना का नेतृत्व करने वालों ने मक्के से निकलते समय यह प्रार्थना की थी, "हे अल्लाह ! हम में से जो तेरा अधिक अवज्ञाकारी तथा संबंध विच्छेदक हो, कल तू उसे नष्ट कर दे ।" अपने विचार से वे मुसलमानों को अवज्ञाकारी समझते थे, इसलिए इस प्रकार की प्रार्थना की । अब जब अल्लाह तआला ने मुसलमानों को विजय का सौभाग्य प्रदान किया, तो अल्लाह तआला काफ़िरों से फ़रमा रहा है कि तुम विजय अर्थात सत्य-असत्य के मध्य निर्णय की प्रार्थना कर रहे थे, तो वह निर्णय सामने आ चुका है, इसलिए अब तुम अधर्म का मार्ग छोड़ दो, तो तुम्हारे लिए लाभकारी है, तथा यदि पुन: मुसलमानों का सामना करने आओगे, तो हम भी पुन: उनकी सहायता करेंगे तथा तुम्हारा समूह संख्या में अधिक होते हुए भी तुम्हारे काम न आ सकेगा ।

[2]अर्थात सुन लेने के उपरान्त उसके अनुसार कर्म न करना यह काफ़िरों का तरीका है, तुम इस नीति से बचो । अगली ही आयत में ऐसे लोगों को मूक, बधिर, अज्ञानी तथा दुराचारी बताया गया है । دَوَابّ बहुवचन है دَابَّة का, जो धरती पर चलने-फिरने वाले

(२२) नि:संदेह अत्यधिक बुरे प्राणी वर्ग अल्लाह तआला के निकट वे लोग हैं जो बधिर हैं मूक हैं जो कि तनिक भी नहीं समझते ।[1]

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

(२३) तथा यदि अल्लाह (तआला) उनमें कोई गुण देखता, तो उनको सुनने की शक्ति प्रदान करता ।[2] तथा यदि उनको अब सुना दे तो अवश्य मुँह फेरेंगे, विमुख होते हुए ।[3]

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ۖ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

(२४) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करो, जब कि रसूल तुमको तुम्हारे जीवनप्रद विषय की ओर बुलाते

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ

प्राणी हैं वह دابّة हैं । तात्पर्य प्राणी वर्ग है अर्थात यह सबसे बुरे हैं जो सत्य के विषय में बधिर, मूक तथा अज्ञानी हैं ।

[1]इसी बात को क़ुरआन करीम में अन्य स्थान पर इस प्रकार वर्णन किया गया है ।

﴿ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴾

"उनके दिल हैं, परन्तु उससे समझते नहीं, उनको आँखें हैं, परन्तु उससे देखते नहीं, तथा उनके कान हैं, परन्तु उससे सुनते नहीं, यह चौपाये की भाँति हैं, अपितु उनसे भी अधिक भटके हुए, ये लोग (अल्लाह से) अनजान हैं ।" (सूर: अल- आराफ -१७९)

[2]अर्थात उनके सुनने की शक्ति को लाभकारी करके उन्हें ठीक समझ प्रदान कर देता, जिससे वे सत्य को स्वीकार कर लेते तथा उसे अपना लेते परन्तु चूँकि उनके अन्दर भलाई अर्थात सत्य की खोज नहीं है, इसलिए वह ठीक समझ से भी वंचित हैं ।

[3]पहले सुनने से तात्पर्य लाभकारी सुनना है । इस दूसरे सुनने से प्राकृतिक रूप से सुनने की शक्ति है । अर्थात यदि अल्लाह तआला उन्हें सत्य बात सुना भी देता, तो चूँकि उनके हृदय में सत्य जानने की खोज ही नहीं, इसलिए वे निरंतर इससे मुँह फेरते रहेंगे ।

يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

हों,[1] तथा याद रखो कि अल्लाह तआला मनुष्य के तथा उसके दिल के मध्य आड़ बन जाता है ।[2] तथा निःसंदेह तुम्हें अल्लाह ही के पास एकत्रित होना है ।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً

(२५) तथा तुम ऐसी आपदा से बचो कि जो विशेष रूप से उन ही लोगों पर घटित न

---

[1] لِمَا يُحْيِيكُمْ ऐसी वस्तुओं की ओर जिससे तुम्हें जीवन मिले । कुछ ने इससे धर्मयुद्ध का भाव लिया है कि इसमें तुम्हारा जीवन साधन है । कुछ ने क़ुरआन के आदेश, परिकलन तथा धार्मिक नियम भाव निकाला है । जिनमें धर्मयुद्ध भी आता है अर्थ यह कि केवल अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन करो, तथा उसके अनुसार कार्य करो, इसमें तुम्हारा जीवन है ।

[2]अर्थात मृत्यु देकर जिसका स्वाद प्रत्येक जीवधारी को चखना है । इसका अर्थ यह है कि इससे पूर्व कि तुम्हें मृत्यु आ जाये अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात मान लो तथा उसके अनुसार कर्म करो । कुछ ने कहा है कि अल्लाह तआला मनुष्य के दिल के जिस प्रकार निकट है, इसमें उसे तुलनात्मक रूप से वर्णन किया गया है । तथा अर्थ यह है कि वह दिलों के भेदों को जानता है, उससे कोई बात छिपी नहीं । इमाम इब्ने जरीर ने इसका भावार्थ यह वर्णित किया है कि वह अपने भक्तों के दिलों पर पूर्ण रूप से प्रभाव रखता है तथा जब चाहता है उनके तथा उनके दिलों के मध्य खड़ा हो जाता है । यहाँ तक कि मनुष्य उसकी इच्छा के बिना किसी चीज़ को प्राप्त नहीं कर सकता । कुछ ने बद्र के युद्ध से सम्बन्धित कहा है कि मुसलमान शत्रुओं की संख्या के कारण भयभीत थे, तो अल्लाह तआला ने उनके दिलों के मध्य खड़े होकर उनके भय को शान्ति में बदल दिया । इमाम शौकानी कहते हैं कि आयत के यह सभी भावार्थ हो सकते हैं । (फ़तहुल क़दीर) इमाम इब्ने जरीर के कथन की पुष्टि उन हदीसों से होती है जिनमें धर्म के मार्ग पर दृढ़ता से रहने की प्रार्थना करने पर बल दिया गया है । जैसे एक हदीस में रसलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "आदम की संतान के दिल, एक दिल की भाँति कृपालु की दो उंगलियों के मध्य है उन्हें जिस प्रकार चाहता है फेरता रहता है ।" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह प्रार्थना की «اللَّهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ، صَرِّفْ قُلُوبَنَا إِلَىٰ طَاعَتِكَ» "ऐ दिलों के फेरने वाले ! हमारे दिलों को अपनी आज्ञापालन की ओर फेर दे ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल क़दर बाब तसरीफ़ अल्लाह तआला अल कुलूब कैफ़ शाआअ) कुछ कथनों में ثَبِّتْ قلبي على دينك है (त्रिमजी अबवाबुल क़द्र) ।

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢٥

होगी जो तुम में से उन पापों के दोषी हैं ।[1] तथा यह जान रखो कि अल्लाह तआला अति घोर दण्ड देने वाला है ।

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٢٦

(२६) तथा उस स्थिति को याद करो, जब कि तुम धरती पर थोड़े थे, निर्बल माने जाते थे । इस भय में रहते थे कि तुम को लोग नोच खसोट न लें, तो अल्लाह ने तुम्हें निवास के लिए स्थान दिया तथा तुमको अपनी सहायता से शक्ति प्रदान की तथा तुम को स्वच्छ खाद्य प्रदान किये, ताकि तुम कृतज्ञता करो ।[2]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٢٧

(२७) हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह तथा रसूल (के अधिकार) का हनन न करो तथा अपनी सुरक्षित वस्तुओं में विश्वासघात न करो ।[3] तथा तुम जानते हो ।

---

[1]इससे तात्पर्य या तो भक्तों का एक-दूसरे पर अधिकार है, जो बिना किसी प्रकार के सामान्य तथा विशेष की छूट के अत्याचार करते हैं अथवा वे सामान्य प्रकोप हैं, जो वर्षा की अधिकता, अथवा बाढ़ आदि धरती तथा आकाश की विपदा के रूप में घटित होते हैं तथा पुण्य तथा पाप दोनों के करने वाले समान रूप से प्रभावित होते हैं । अथवा कुछ हदीसों में पुण्य के कार्यों का आदेश देना तथा पाप के कर्मों से रोकने को छोड़ देने से जिन प्रकोप की चेतावनी का वर्णन किया गया है, वह तात्पर्य है ।

[2]इससे मक्की जीवन की कठिनाईयों तथा भय का वर्णन तथा उसके उपरान्त मदीने के जीवन में सुख-शान्ति तथा समृद्धि जो अल्लाह की कृपा से प्राप्त हुई, उसका वर्णन है ।

[3]अल्लाह तआला तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अधिकारों में विश्वासघात का तात्पर्य यह है कि प्रत्यक्ष रूप से तो अल्लाह तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि के आज्ञाकारी बन कर रहें, एकान्त में उसके विपरीत कार्य करें । विश्वासघात यह भी है कि किसी अनिवार्य कार्य को छोड़ दे तथा निषेधित कार्य को करे । तथा ﴿وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ﴾ का अर्थ है कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के पास कोई वस्तु सुरक्षा के विचार से रखाये, उसमें विश्वासघात न करे । नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी अमानत की सुरक्षा

(२८) तथा तुम इस बात को जान रखो, कि तुम्हारा धन तथा तुम्हारी सन्तान एक परीक्षा के लिए हैं ।[1] (तथा इस बात को भी जान रखो) कि अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा प्रत्युपकार है ।

وَاعْلَمُوٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

(२९) हे ईमानवालो ! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे, तो अल्लाह (तआला) तुम्हें एक निर्णय की चीज़ प्रदान करेगा। तथा तुम से तुम्हारे पाप दूर करेगा तथा तुमको क्षमा कर देगा तथा अल्लाह (तआला) महाकृपालु है ।[2]

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

पर बल दिया गया है । हदीसों में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अधिकतर भाषणों में अवश्य फ़रमाते :

«لاَ إِيمَانَ لِمَنْ لا أَمَانَةَ لَهُ، وَلاَ دِينَ لِمَنْ لا عَهْدَ لَهُ».

"उसका ईमान नहीं जिससे अमानत सुरक्षित नहीं, तथा उसका धर्म नहीं, जिसको वचन पूरा करने की दृढ़ता का आभास नहीं ।" (मुसनद अहमद भाग ३, पृष्ठ १३९ तथा हदीस के विशेषज्ञ अलबानी ने कहा कि "यह स्वच्छ हदीस है ।"

[1]धन एवं सन्तान का प्रेम ही किसी व्यक्ति को सामान्य रूप से विश्वासघात करने पर तथा अल्लाह एवं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा भंग करने पर विवश करता है । इसलिए इनको आपत्ति (परीक्षा) कहा गया है अर्थात इसके द्वारा मनुष्य की परीक्षा ली जाती है कि उनके प्रेम के साथ विश्वास तथा आज्ञापालन की माँग को पूरा करता है अथवा नहीं ? यदि वह पूरा करता है, तो समझ लो वह अपनी परीक्षा में सफल हो गया । उसके दूसरे रूप अर्थात विपरीत में असफल । इस अवस्था में यह धन तथा सन्तान उसके लिए अल्लाह की यातना को भोगने का कारण बन जायेंगे ।

[2]अल्लाह का भय (तक़्वा) का अर्थ यह है कि अल्लाह के आदेशों की अवहेलना तथा निषेधित कार्यों से बचना । तथा फ़ुरक़ान के कई अर्थ वर्णन किये गये हैं । जैसे ऐसी वस्तु जिसके द्वारा सत्य तथा असत्य के मध्य भेद किया जा सके । अर्थ यह है कि अल्लाह के भय (तक़्वा) के कारण हृदय दृढ़, दूर दृष्टि तथा सत्य का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य प्रत्येक ऐसे अवसर पर, जब जन सामान्य शंका तथा संदेह की वादियों में भटक रहा होता है, उसे सीधे मार्ग का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है । इसके

(३०) तथा उस घटना का भी वर्णन कीजिए, जबकि काफ़िर लोग आपके विषय में षड़यन्त्र कर रहे थे कि आप को बंदी बना लें अथवा आपकी हत्या कर दें अथवा आपको देश निकाला दे दें ।[1] तथा वह अपना षड़यन्त्र रच रहे थे तथा अल्लाह तआला अपनी योजना बना रहा था तथा अल्लाह तआला सर्वोत्तम नियोजक है ।[2]

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۖ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ﴿٣٠﴾

(३१) तथा जब उनके समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जातीं हैं तो कहते हैं कि हमने सुन लिया, यदि हम चाहें तो हम भी इसके समान कह दें , यह तो कुछ भी नहीं मात्र पूर्वजों की कल्पित कथायें हैं ।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا ۙ إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

अतिरिक्त विजय, कृपा, मोक्ष तथा मुक्ति भी इसके अर्थ किये गये हैं तथा सभी अर्थों का तात्पर्य हो सकता है । क्योंकि तक़वा से अवश्य यह सारे लाभ प्राप्त होते हैं । बल्कि इसके साथ पापों से छुटकारा, अन्तिम मोक्ष, तथा महान कृपा प्राप्त होती है ।

[1]यह उस षडयन्त्र का वर्णन है जो मक्का के मूर्तिपूजक नेताओं ने एक रात्रि दारुल नदवा में तैयार किया था । अन्त में यह निर्धारित किया गया कि प्रत्येक जाति के युवकों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या करने के लिए नियुक्त किया जाय, ताकि किसी एक की हत्या के बदले में हत्या न की जा सके बल्कि धन देकर जान छूट जाये ।

[2]अत: इस षड़यन्त्र की पूर्ति के लिए मूर्ति पुजारी युवक आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर के बाहर एक रात्रि इस प्रतीक्षा में खड़े रहे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से बाहर निकलें तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या कर दें । अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस षडयन्त्र की सूचना दे दी तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने घर से बाहर निकलते समय मिट्टी की एक मुट्ठी ली तथा उनके सिरों पर डालते हुए निकल गये, किसी को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकलने का पता भी नहीं चला, यहां तक कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुरक्षित सौर नामक गुफ़ा में पहुँच गये । यह काफ़िरों के मुकाबिले में अल्लाह की योजना थी जिससे अच्छी योजना कोई नहीं बना सकता । (मकर के अर्थ के लिए देखें सूर: आले इमरान की आयत संख्या ५४ की व्याख्या)

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٢﴾

(३२) तथा जबकि उन लोगों ने कहा, हे अल्लाह ! यदि यह क़ुरआन वास्तव में आप की ओर से है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा, अथवा हम पर कोई कष्टदायक प्रकोप घटित कर दे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٣﴾

(३३) तथा अल्लाह (तआला) ऐसा न करेगा कि उनमें आपके होते हुए उनको यातना दे। तथा अल्लाह (तआला) उनको यातना न देगा[1] इस अवस्था में कि यह क्षमा-याचना भी करते हों।[2]

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ۚ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

(३४) तथा उनमें क्या बात है कि उनको अल्लाह (तआला) दण्ड न दे यद्यपि कि वे लोगों को मस्जिदे हराम से रोकते हैं जबकि वह लोग इस मस्जिद के संरक्षक नहीं, उसके संरक्षक अल्लाह की आज्ञापालकों के सिवाय कोई नहीं, परन्तु उनमें अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते।[3]

---

[1]अर्थात ईशदूतों की उपस्थिति में समुदायों पर प्रकोप नहीं होता, इसलिए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उपस्थिति भी उन लोगों की सुरक्षा एवं शान्ति से रहने का कारण था।

[2]इससे तात्पर्य है कि वे भविष्य में मुसलमान होकर क्षमा-याचना करेंगे अथवा परिक्रमा करते समय मूर्तिपूजक«غفرانك ربنا! غفرانك»कहा करते थे (हमारे पालनहार हमें क्षमा कर दे)

[3]अर्थात वे मूर्तिपूजक अपने आप को मस्जिदे हराम (ख़ानये काअबा) का संरक्षक समझते थे, इस के कारण जिसको चाहते थे परिक्रमा की अज्ञा देते थे जिसको चाहते थे नहीं देते थे। अत: वह मुसलमानों को भी मस्जिदे हराम में आने से रोकते थे, जबकि वास्तविकता यह थी कि वे संरक्षक नहीं थे। تحكّمًا अन्याय पूर्वक बने हुए थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, उसके संरक्षक तो अल्लाह से भय रखने वाले व्यक्ति ही बन

(३५) तथा उनकी नमाज़ कआबा: के निकट केवल यह थी, सीटियाँ बजाना तथा तालियाँ बजाना[1] तो अपने कुफ्र के कारण इस यातना का स्वाद चखो।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً ۚ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

(३६) निःसंदेह यह विश्वासहीन लोग अपना धन इसलिए व्यय कर रहे हैं कि अल्लाह के मार्ग से रोकें, तो ये लोग अपना धन व्यय करते ही रहेंगे, फिर वह धन उनके लिए पश्चाताप का कारण बन कर रह जायेंगे, फिर पराजित हो जायेंगे। तथा काफ़िरों को नरक की ओर एकत्रित किया जायेगा।[2]

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيُنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

सकते हैं, न कि मूर्तिपूजक। इस आयत में जिस यातना का वर्णन है, उसका तात्पर्य मक्का विजय है, जो मक्का के मूर्तिपूजकों के लिए एक कठोर यातना की स्थिति रखता है। इससे पूर्व की आयत में जिस यातना को मना किया गया है, जो पैग़म्बरों की उपस्थिति अथवा क्षमा-याचना करते रहने के कारण नहीं आता, उससे तात्पर्य नष्ट-भ्रष्ट करने वाला प्रकोप तथा सम्पूर्ण विनाश है। शिक्षा देने के लिए तथा चेतावनी के लिए छोटे-छोटे प्रकोप इसमें सम्मिलित नहीं हैं।

[1]मूर्तिपूजक जिस प्रकार अल्लाह के घर (ख़ानये काअबा) की नंगे होकर परिक्रमा करते थे, उसी प्रकार परिक्रमा करते समय मुख में उंगलिया डाल कर सीटियाँ बजाते थे तथा तालियाँ बजाते थे। इसको भी यह आराधना और पुण्य का कार्य समझते थे। जिस प्रकार आज भी अशिक्षित सूफ़ी मस्जिदों तथा आस्तानों पर नाचते हैं। ढ़ोल पीटते तथा धमालें डालते हैं। यही हमारी नमाज़ तथा आराधना है। नाच-नाच कर अपने यार (अल्लाह) को मना लेंगे। (نعوذ بالله من هذه الخرافات)

[2]जब बद्र में मक्का के क़ुरैश की पराजय हुई तथा उन के पराजित लोग वहाँ पहुँच गये। इधर अबू सुफ़ियान भी अपना व्यापारिक क़ाफ़िला लेकर पहुँच चुके थे, तो कुछ लोग जिनके पिता व पुत्र अथवा भाई इस युद्ध में मारे गये थे, अबू सुफ़ियान तथा जिनकी उस व्यापारिक क़ाफ़िले में भागीदारी थी, उनके पास गये और प्रार्थना की कि इस माल का प्रयोग मुसलमानों के विरुद्ध करें। मुसलमानों ने हमें अत्यधिक हानि पहुँचायी है, इसलिए उनसे बदला लेने के लिए युद्ध करना आवश्यक है। अल्लाह तआला ने इस आयत में इसी प्रकार के लोगों अथवा इसी प्रकार का कार्य करने वालों

(३७) इसलिए कि अल्लाह (तआला) अपवित्रों को पवित्रों से अलग कर दे ।[1] तथा अपवित्रों को एक-दूसरे से मिला दे, फिर उन सबको इकट्ठा करे, फिर उन सब को नरक में डाल दे। ऐसे लोग पूर्ण रूप से हानि में हैं।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٣٧﴾

(३८) (आप) अविश्वसियों से कह दीजए कि यदि यह लोग रुक जायें तो इनके सारे पाप जो पहले कर चुके हैं, क्षमा कर दिये जायेंगे।[2]

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنتَهُوا يُغْفَرْ لَهُم مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِن يَعُودُوا

के विषय में फ़रमाया है कि निःसंदेह यह अल्लाह के मार्ग से लोगों के रोकने के लिए अपना माल व्यय कर लें, परन्तु उनके भाग्य में केवल पश्चाताप तथा पराजय के अतिरिक्त कुछ भी नहीं आयेगा तथा परलोक में उनका ठिकाना नरक होगी।

[1]यह अलगाव आख़िरत में होगा कि आज्ञाकारियों को अवज्ञाकारियों से अलग कर दिया जायेगा, जैसाकि फ़रमाया,

﴿وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ﴾

"हे मुजरिमों ! आज अलग हो जाओ।" (सूर: यासीन-५९)

अर्थात पुण्यात्माओं से तथा अपराधियों एवं मिश्रणवादियों तथा अवज्ञाकारियों को एकत्रित करके सब को नरक में डाल दिया जायेगा। अथवा फिर इसका संबन्ध दुनिया से है। अक्षर "लाम" का प्रयोग सम्बन्ध बताने के लिए है। अर्थात काफ़िर अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिए जो धन व्यय कर रहे हैं, हम उनको ऐसा करने का अवसर प्रदान करेंगे, ताकि इसके द्वारा अल्लाह तआला अपवित्र को पवित्र से काफ़िरों को ईमानवालों से एवं स्वार्थियों को निःस्वार्थियों से अलग कर दे। इस आधार पर आयत का अनुवाद होगा। काफ़िरों के द्वारा हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे, वह तुम से लड़ेंगे तथा हम उन्हें उनके माल भी लड़ाई में व्यय करने की शक्ति देंगे ताकि अपवित्र, पवित्र से विलग हो जाये फिर उन काफ़िरों को परस्पर मिला देगा अर्थात सब को एकत्रित कर देगा। (इब्ने कसीर)

[2]रुक जाने का अर्थ मुसलमान हो जाना है जिस प्रकार हदीस में भी है, "जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार करके पुण्य का मार्ग अपना लिया, उससे उसके पापों की पूछ-ताछ नहीं होगी, जो उसने अज्ञानकाल में किये होंगे तथा जिसने इस्लाम धर्म स्वीकार करके भी बुराई न छोड़ी, उससे पूर्व तथा पश्चात सभी कर्मों का हिसाब होगा।" (सहीह बुख़ारी

فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

तथा यदि अपनी वही रीति रखेंगे तो पूर्व के (विश्वासहीनों के) लिए नियम लागू हो चुका है।[1]

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣٩﴾

(३९) तथा तुम उन से उस समय तक संघर्ष करो कि उनकी आस्था में बिगाड़ न रहे[2] तथा धर्म अल्लाह ही का हो जाय।[3] फिर यदि यह रुक जायें, तो अल्लाह (तआला) उनके कर्मों को ख़ूब देखता है।[4]

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

(४०) तथा यदि मुँह फेरें,[5] तो विश्वास रखें कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मित्र है।[6] वह उत्तम मित्र तथा उत्तम सहाय है।[7]

बाब इस्तेताबतिल मुर्तद्दीन, मुस्लिम किताबुल ईमान बाब हल यूआख़ज़ बे आमाल अल-जाहिलीया:) एक अन्य हदीस में है

«الإِسْلَامُ يَجُبُّ مَا قَبْلَهُ»

"इस्लाम पूर्व के पापों को मिटा देता है।" (मुसनद अहमद भाग ४, पृ.१९९)

[1]अर्थात यदि वे अपने अविश्वास एवं द्वेष पर अडिग रहे तो शीघ्र अथवा देर से यातनाओं के भोगी बनकर रहेंगे।

[2]फ़ित्ना से तात्पर्य है शिर्क (मिश्रणवाद) अर्थात उस समय तक धर्मयुद्ध जारी रखो जब तक मिश्रणवाद समाप्त न हो जाये।

[3]अर्थात एकेश्वरवाद (तौहीद) का ध्वज पूरे विश्व में लहरा जाये।

[4]अर्थात तुम्हारे लिए उनका ऊपरी इस्लाम ही बस है अन्त:करण का विषय अल्लाह को समर्पित कर दो क्योंकि उसे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सब का ज्ञान है।

[5]अर्थात इस्लाम स्वीकार न करें तथा अविश्वास एवं तुम्हारे विरोध पर अडिग रहें।

[6]अर्थात तुम्हारे शत्रुओं पर तुम्हारा सहायक, समर्थक एवं संरक्षक है।

[7]अत: सफल भी वही होगा जिसका स्वामी (रक्षक) अल्लाह हो तथा प्रभावी भी वही होगा जिसका सहायक वही हो।